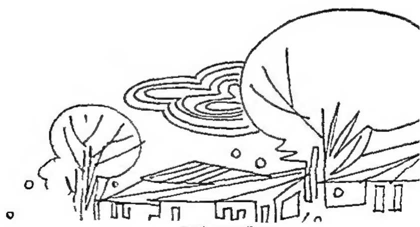
डा० लक्ष्मीनारायण लाल का
नया नाटक :

पंच पुरुष

लि पि प्र का श न



पंच पुरुष

डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल



मूल्य : आठ रुपये

प्रथम संस्करण : सितम्बर, 1978

प्रकाशक
लिपि प्रकाशन
1, असारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110002,

मुद्रक : साधना प्रिंटर्स, दिल्ली-32

PANCH PURUSH (Play)
By Dr. Laxmi Narain Lal Rs. 8 00

प्रस्तुत नाटक

कुछ वर्ष पहले श्री बदीकौल के निर्देशन और सचालन में आगरे के जन नाट्य के तत्वावधान में एक नाट्य शिविर हुआ था। उसमें मेरा एक लिखा जाता हुआ नाटक, जिसका तब मैंने नाम दिया था 'सस्कार ध्वज' प्रशिक्षण और प्रयोग के स्तर पर खेला गया था। तब वह नाटक का पहला 'ड्राफ्ट', पहला स्वरूप था। उसे खेलने-देखने की प्रक्रिया में और उसके बाद में उसे अन्तिम रूप देने में उस पर लगातार कार्य करता रहा। तब से पाच बार उस नाटक को एक के बाद दूसरा लिखता रहा। और अब इसे पूरी तरह से बिलकुल नया नाट्य रूप दे पाया हू।

नाटक लिखा नहीं जाता, रचा जाता है। मच की कसौटी पर चढ़कर नाटक स्पष्ट यह बता देता है कि अपने शिल्प और कथ्य में कहा और कितना शक्तिहीन और असफल है, तथा किस तरह से उसे दुबारा-तिबारा लिखकर शक्तिपूर्ण और सफल बनाया जा सकता है। यही है नाटक का रचा जाना।

अब यह नाटक अपने अन्तिम रूप में रचकर अपने कथ्य और शिल्प में सपूर्ण हो गया है। आशा है, नाट्य प्रेमियों को यह पूर्ण सतोष और नया उत्साह देगा।

—लक्ष्मीनारायण लाल

पुरुष पात्र

बाबा	बीपत
उत्तमा	शेख मौला
ठाकुर	पुजारी
बीरसिंह	जगमग
कन्हाई	पंचम
चाकुल	गोबर

स्त्री पात्र

ठकुरानी	मैना
गंगाजली	गोपी
माटी	

पंच पुरुष

पहला अंक

पहला दृश्य

[मंच की दाईं ओर गांव का चबूतरा। पृष्ठभूमि में ग्राम पंचायत का चुनाव हो रहा है। तरह-तरह के बाजे बज रहे हैं। लोग बातें करते हुए आते हैं।]

जगमग — अभी तो पंचानन बाबा कह रहे थे—ऐसी दशा में ग्राम पंचायत का चुनाव मति करो। यह चुनाव नहीं डाकाजनी है—जिसकी लाठी उसकी भैंस! इस मारकाट, दुश्मनी, वैर-विरोध से जो पंचायत बनेगी वह किस काम की होगी?

पंचम — पर सरकार का हुकुम जो था।

जगमग — सरकार तो दिल्ली में बैठी है। उसे क्या पता गांव में क्या-क्या हो रहा है। गांव है भी कहीं अब! अरे यह गांव था, बाबा परबाबा के जमाने में, जब यहां अंगरेजी राज नहीं आया था। पंचानन बाबा बताते हैं—तब पंच परमेश्वर होते थे, हां। आज की तरह नहीं कि बाबुल सिंह बंदूक और लाठी की ताकत से जितना वोट चाहे उतना गिरा लें, और जबरदस्ती। देखो न, पंच का चुनाव हो रहा है कि चोर डाकू बेईमान का!

कन्हाई — सब चाहते हैं ताकत—ताकि दूसरों को दबा सकें—सब उसी

ताकत का चक्कर है। भीतर तो कुछ है नहीं। (चबूतरे के पास बैठता है।) लगता है हमारे भीतर भी कुछ नहीं बचा है।

पंचम : अरे पंचानन बाबा आ रहे हैं। (आते हैं) राम राम बाबा, वोट डालि आए?

बाबा : एक ओर ठाकुर ब्राह्मन, दूसरी ओर कुर्मी अहीर, तीसरी ओर हरिजन, चौथी ओर शेख पठान—मैंने पूछा—कहो भइया, मैं किस गड्ढे में गिरूं? सब के बाजे अलग-अलग बज रहे हैं। मैंने कहा—यह बाजा काल बजा रहा है। अभी तो कुल चार हैं, पर चुनाव के बाद एक में चार होओगे—फिर सोलह से चौरासी—कुल चौरासी घर हैं न इस गांव में। (चबूतरे पर बैठते हुए) मैंने कहा—मैं किसी को अपना वोट नहीं दूंगा।

[बाबा के साथ सब गाते हैं।]

उगहु सुरुज रे, उगहु सुरुज रे
तुम बिनु जग अंधियार।
सोने के गेड़ुआ गंगाजल पानी
अछत बिरिया हार।
हाथ जोरि करूं बिनती
देहु अपन उजियार—
तुम बिनु जग अंधियार।
गंगा पैठि बाबा सुरुज से बिनऊं
तुम बिनु जग अंधियार।
उगहु सुरुज रे, उगहु सुरुज रे…।

बाबा : हमने तब उत्तमा की बात नहीं मानी।

जगमग : उत्तमा हमें छोड़कर चला गया।

बाबा : अरे हमी सबने उत्तमा को छोड़ दिया। उसका अपमान किया। हमी ने उसे गांव से खदेड़ दिया। वह सच कहता था—हर चीज अपने धर्म पर टिकी होती है—धर्म माने व्यवस्था—व्यवस्था माने आचरण। एक थी गांव की अंगरेजों से पहले

की व्यवस्था, फिर उसे खत्म कर आई अंगरेज की जमींदारी व्यवस्था। जमींदारी व्यवस्था टूटी, उसकी जगह हमें अपनी नई व्यवस्था चाहिए। सब कुछ के बावजूद गांवों में जो इतनी उदासी, फूट, वैर-विरोध है, उसका एक ही कारण है—यहां कोई व्यवस्था नहीं।

जगमग : ग्राम पंचायत क्या वह व्यवस्था नहीं बाबा ?

बाबा : पूरा गांव जब एक समुदाय हो—एक परिवार की तरह, तभी तो पंचायत होगी—तभी तो पंच परमेश्वर होंगे। नहीं तो देखो न, पंचायत चुनाव में क्या हो रहा है…।

कन्हाई : अरे रे रे ! फिर लाठी चल गई बाकुल सिंह और मनोहर में।

जगमग : कुशल हुआ, पुलिस आ गई बीच में।

पंचम : पुलिस न होती तो कई कतल हो गए होते अब तक !

जगमग : क्या मतलब है इस पंचायत चुनाव का ! अठारह साल से पंचायत नहीं बनी थी, तो कौन-सा पहाड़ टूट गया था !

बाबा : पहाड़ तो तभी टूटा था कांग्रेस राज में जब पहली बार पंचायत बनी थी। जो भ्रष्ट राजनीति ऊपर थी, वही यहां तक फैल गई आकाशबेल की तरह ! देखो न, पंच चुनाव का अखाड़ा इधर लहा जा रहा है, उधर बाजे बज रहे हैं काली-थान पर, डीहबाबा के चौरा पर।

जगमग : भला दोनों मे क्या सम्बन्ध है बाबा !

बाबा : बाजा तो वही पुराना है—जब यह पूरा गांव एक परिवार जैसा था। और यह चुनाव का नया अखाड़ा आजादी के बाद का है। वह पुराना कहीं नहीं है, पर उसके खंडहर अब तक हैं। वह पुराना ही आधार है, तभी उसकी जाने-अनजाने याद आती है।

जगमग : चुप क्यों हो गये बाबा ?

बाबा : वही तुम्हारी पहाड़ टूटने वाली बात सिर में टकरा रही है। कभी देखा है टूटा हुआ पहाड़ ? सुना है मैंने अपने पिता से। वह पैदल बद्रीनाथ धाम गए थे। वह बताते थे गंगोत्री के पास

पहाड टूटकर गिरा था—भयकर विकराल था वह दृश्य, बताते-बताते रो पडे थे। दूसरी बार फिर रोये थे—मरने से पाच दिन पहले—रो रोकर कहने लगे—अरे पचानन बेटा, पहाड तो अपने गावन म भी टूटा, लार्ड कार्नवालिस का वह इस्तमरारी बदोबस्त। जहा सर्व भूमि गोपाल की थी, जो *गाव की धरती माता थी, सबकी समान,* वह उसके हाथो काट-पीट कर बिक गई जिसने उसे खरीदा।

जगमग अच्छा बाबा, तब यह जमीन किसी की नही थी ?

कन्हाई किसी की मिल्कियत नही ?

पचम तू चुप रह, बात समझन दे।

बाबा अरे सबको समझने दो, एक दो के समझने से कुछ नही होगा।

जगमग हा बाबा!

बाबा *यह पूरी जमीन, खेत, बाग बगीचे, पोखर कुआ गाव की यह* सारी धरती पूरे गाव की थी। पूरा गाव एक परिवार था—एक समुदाय। जन्म के आधार से जाति नही थी, काम धधा के मुताबिक थी। खेती करने वाला गृहस्थ ही जजमान था बाकी सारा गाव उसके पुरोहित थे। ब्राह्मण, कुम्हार, तेली, नाई, जुलाहा धोबी, दर्जी, लोहार, बढई चर्मकार, धुनिया, माली सब पुरोहित थे। यह एक पूरी व्यवस्था थी—जैसी भी थी, पर पूरी थी और इसी मिट्टी से उपजी थी। अगरेजी राज ने इसे तोड दिया—जैसे कोई एक पूरा पहाड टूट जाए, *जैसे एक पूरा सगीत टूट जाए और एक गहरी उदासी,* निराशा छा जाए।

[सूप पर नाखून चलाकर सगीत के साथ चनैनी गा पडता है—लोग साथ देत हैं।]

डिहवा लै गै डबरवा ना
डिहवा कै मरिगै मसनवा ना।
गउवा म आवै जमीदरवा ना
गउवा म आवै ठकुरवा ना।

जेकरे सरन डारी डेरवा ना
दिनवा सुरुज करें जोतिया ना।
गावा के लोगे गवढ़िया ना
मरि मरि सहैं गरिबिया ना।
ठाकुर क आवें लसकरिया ना!
[गायन चल रहा है दृश्य बदलता है।]

दूसरा दृश्य

[काठ के घोड़े पर बैठा हुआ ठाकुर राजा आता है। उसके पीछे पीछे बदूक लिए सिपाही।]

ठुमुकि ठुमुकि चलै घोड़वा ना
घोड़वा के पीछे सिपहिया ना।
हे ह हे हे हे
हे हे ह ह हें।
ठाकुर चढल आवें घोड़वा ना
ठाकुर की अखिया में रजवा ना।

सिपाही — हैप हैप! चुप्प रहो चोप्प! गाव गोप्प!

ठाकुर — हे हे हे हें! इन्हे बता दो मैं कौन हू!

सिपाही — अरे उठकर सलाम करो, सलाम। तीन कोस पूरब, ढाई कोस पच्छिम दो कोस उत्तर चार कोस दक्खिन—इतने गाव जवार, जमीन जायदात के राजा जमीदार को करो प्रणाम, अगरेज बहादुर के खास खैरख्वाह देखो क्या है रूप, क्या है तेज क्या है प्रताप, बाप रे बाप!

सब — धन्य धन्य राजा प्रताप—तू ही माई तू ही बाप।

ठाकुर — क्या कहा हमारी समझ मे कुछ नही आया!

सिपाही — आप हैं अगरेजो के बनाए नये राजा, ये हैं प्रजा पुरानी। इनकी भाषा आप न समझें, आपकी भाषा ये न बूझें—तभी

तो राज चलेगा। तभी तो राज चलेइगा। तभी तो राज चल्लैइगा!

ठाकुर . वीरसिंह!

सिपाही समझ लो मेरा नाम वीरसिंह है जी सरकार, धर्मावतार!

ठाकुर : मेरी चीठी लिखो अगरेज बहादुर के नाम—जिला कमिश्नर सर विलियम लारेंस—साहब बहादुर को मालूम हो कि अपनी पूरी जमींदारी मे आज मैंने अपना दौरा पूरा किया। दौरा बड़ा कामयाब रहा। यह सही है कि यह सारा इलाका अपनी इतनी उपजाऊ जमीन के बावजूद अकाल और भुखमरी का शिकार है। गाव के लोग बेकारी औ' गरीबी से बीमार हैं। पर हैं यहा के लोग हट्टे कट्टे और सीधे सादे। इनके भीतर तमाम ताकत सोई है, बस उसे किसी बहाने से जगाकर काम लेने वाला चाहिए। य प्रजा हैं, इन्ह कोई राजा चाहिए। आपकी मेहरबानी से मैं यहा राजा बनकर पहुच गया। अब इस पूरे इलाके को अपनी ताकत और तरकीब से सम्हाल लूगा। ये आलसी, मतोषी, अधविश्वासी हैं, इन्ह किसी का भय चाहिए। कोई इन्ह किसी काम मे जोतकर हाकने वाला चाहिए। ये भाग्य के खूटो मे बधे हुए पशु समान हैं—इन्ह एक दड चाहिए। कितना आसान है इन पर राज करना, इनसे अपना उल्लू सीधा करना।

वीरसिंह (पान देते हुए) धर्मावतार, उल्लू सीधा करना यह मुहावरा अगरेज बहादुर के पल्ले नही पड़ेगा—क्योंकि उल्लू तो सीधे होते ही हैं यह देख लिया उन्होने। ओ रे, सम्हाल राजा की पीक। सम्हालता है कि नही, बेवकूफ कहीं का!

[राजा की पीक को चवई अपने अगोछे मे लेता है। डरे हुए गाव के लोग आते हैं।]

जगमग दुहाई धर्मावतार की!

मोना : गरीब परवर, मेरे बालिद यह रटते-रटते मर गए कि जब से इस्तमरारी बदोबस्त हुआ गाव अपना मालिक नहीं रहा।

शुक्र है—इतने दिनों बाद आप हमें मालिक मिले। खुदा आपका राज हम पर कायम रखे !

पंचम • हम सब अन्न पानी बिना मर रहे हैं ।

बाकुल भगवान ने आपको यहा भेजा।

पुजारी मैं कह रहा था काल का कोप है, पर कौन माने मेरी ! जिस घडी प्रजा को राजा मिलेगा, काल कोप समाप्त हो जाएगा। यत्र राजा सुखी, तत्र प्रजा सुखी। जै हो महराज की !

बाबा ऐ सावधान, राजा की अगाडी घोडा की पिछाडी।

पुजारी अरे चुप रहो पचानन मिसिर, राजा का घोडा जिस ग्राम मे पैर रखे, वह ग्राम नही तीर्थधाम हो जाएगा हा ! अरे देखते क्या हो, घोडे का पैर दबाओ। राजा को पखा करो !

[दो लोग घोडे के पैर दबाते हैं। घोडा बिगडता रहता है। दो लोग धोती पकडकर पखा करते हैं।]

ठाकुर मैंने खुद जाच पडताल की है—यहा की जमीन बहुत उपजाऊ है। पानी म ताकत है। लोग जानदार हैं। बडे काम लायक।

पंचम सरकार घोडे से उतरिए हम आपके लिए आसन लाते हैं।

जगमग हम आपके लिए फल फूल लाते ह।

पुजारी पीने को गगाजल।

ठाकुर देखो जरा सी तारीफ की नही कि पूछ हिलाने लगे। तुम लोग अव्वल दर्जे के काहिल हो। भगवान तुम लोगो से नाराज है—तभी यह अकाल पडा है। भगवान को प्रसन्न करने के लिए इस गाव म ठाकुर जी का एक मन्दिर तुम लोगों के हाथो बनेगा—तभी सबका कल्याण होगा।

[ठाकुर की बात का अंतिम अंश वीरसिंह दुहराता है।]

सब हम सब तैयार है।

पंचम यह तो बहुत अच्छी बात है।

बाकुल सभी का कल्याण है।

पुजारी हमे आप ही जैसा धर्मात्मा पुरुष चाहिए था। आपकी दया से

हम सब का कष्ट दूर होगा। (पत्रा देखते हुए) सूर्य उत्तरायण है। आषाढ सुदी पचमी का मुहूर्त शुभ है। अगले गुरुवार को दो घडी सोलह पल, तेरह विपल पर सूर्या नक्षत्र का योग है—उसी दिन प्रात काल ठाकुर जी के मन्दिर की नीव दी जाए!

ठाकुर : कौन है यह ?

पुजारी ब्राह्मण पुजारी। इस गांव का पुरोहित!

बाबा पहले जो खेती गृहस्थी करता था, वही था जजमान बाकी गाव के सारे पौनी परजा पुरोहित होते थे। अब केवल नाम-मात्र का यही ब्राह्मण पुरोहित रह गया—तभी तो गाव की यह दुर्दशा हुई।

ठाकुर वह पुरानी व्यवस्था थी जो दम तोड चुकी। अब राजा बहादुर की जमीदारी की नई व्यवस्था मे देखना, गावो मे बहार आ जाएगी।

पुजारी सत्य वचन, क्योकि बुद्धि नहो, सतोष ही इनका धर्म है। बच-पन से बडे होने तक समान गति से चलना। कोई चलावै, तभी ये चलेंगे। वरना सीधी लकीर के फकीर। खुद कोई परिवर्तन नही चाहेगे। सोचने की कभी कोई आदत नही पडी। जो आया, भाग्य को मानकर आख मूदे चल पडे। पुराने सस्कारो के गुलाम। जो इन्हे खीच ले जाए, उसी के झुड मे। स्मरण शक्ति ज्यादा तेज नही। मामूली-सी बात पर अड जाना। हद दर्जे के भावुक—बात-बात मे डर जाना, गुस्से म कापने लगना। जैसे दलदल जमीन होती है · ।

बाबा चुप हो जाओ पुजारी—जिस दिन से ब्राह्मण चाटुकार हुआ तभी तो यह सत्यानाश हुआ।

पुजारी . देखिए धर्मावतार, यह कटु वचन!

ठाकुर ठीक है—ठाकुर मन्दिर के पुजारी तुम्हीं होगे। जाओ, देव-स्थान की नीव डालने का प्रवन्ध करो। धन और साधन से भरी बैलगाडिया आ रही हैं। वीरसिंह!

वीरसिंह धर्मावतार!

ठाकुर घर-घर मे अनाज बटवाओ। कूए खुदवाओ, ठाकुर मन्दिर के काम मे पूरे गाव जवार को लगवाओ। मेरे लिए पक्की हवेली बनाओ।

[बाबा गाता है, शेप लोग भी उसे गाते हुए चले जाते हैं।]

पुरवा से आवैं राजा ठाकुर सवरिया
पछुआ से आवैं अगरेज अल्ला हो मिया!
पुरवा से आवै राजा तेग तलवरिया
पछुआ से आवै बडकी तोप अल्ला हो मिया!

[उस चबूतरे पर अकेला बाबा रह जाता है।]

बाबा सचमुच सोया हुआ गाव जैसे धीरे धीरे जगने लगा। जैसे-जैसे ठाकुर मन्दिर बनने लगा लोगो मे न जाने कहा का उत्साह, न जाने कितना पुरुषार्थ पैदा हो गया। पहले काम ही पूजा थी, घर-घर म व्यवसाय और उद्योग, ग्राम देवता की सामूहिक पूजा। अब काम अलग, पूजा अलग। पहले हर घर मे भगवान का निवास था अब केवल ठाकुर मन्दिर मे ठाकुर भगवान । मन्दिर का काम बडी तेजी से पूरा हो रहा था ।

तीसरा दृश्य

[ठाकुर मन्दिर बनने का काम जोरो से चल रहा है। पृष्ठभूमि से श्रमरत स्त्रियो का गायन सुनाई दे रहा है।]

कौने बन उपजै सुपरिया कौने बन नरियर,
रामा कहि बन चुअत गुलाब से चुनरी रगऊबै।
बाबा बन उपजै सुपरिया ससुर बन नरियर
पिया बन चुअत गुलाब सो चुनरी रगउबै।

[माटी अपनेबेटे वीपत को लेकर आती है।]

माटी : अरे आदमी बन जाएगा। काम नहीं करेगा तो खाएगा क्या रे? जा जा काम कर। आंखें फूटी हैं तेरी, देख सारा गांव-जवार मन्दिर के काम में लगा है। अरे इस काज में धरम है, ऊपर से मजदूरी भी है। चार आने रोज। अब तक यहीं एक आना भी नहीं मिलता था।

बीपत : मोसे इतनी मेहनत का काम नाही होई।

माटी : तो आ अपने हाथ में मेरी चूड़ी पहन ले।

बीपत : काका तो गए हैं काम पर।

माटी : अरे बकर-बकर मत कर दहिजरा का पूत! सारा गांव काज करेगा तू जवान पट्ठा बैठकबाजी करेगा रे मुहझौंसा।

बीपत : जब देखो बस कामै काम। कहां से आया यह ठाकुर हराम!

माटी : चुप रह, दहिजरा का पूत। दइया रे दइया, कहीं सुन लिया तो उल्टा टंगवा देगा पेड़ पर। अरे ठाकुर बाबू आए तभी न इतने काम लगा दिए, नाही तो यहां काम ही कौन कराता था? जा, जा, काम कर।

बीपत : अच्छा आज नाही कल।

माटी : अच्छा रुक, बुलाती हूं! सिपाही, ओ सिपाही!

बीपत : चुप रह, क्या करती है। उसी के मारे तो मैं काम पर नहीं जाता।

माटी : जा, जा। अच्छी तरह मन लगाकर काम करना। परसाद मिलेगा। पैसे मिलेंगे। घर बन जाएगा। तेरी शादी हो जायगी।

बीपत : सच माई, मेरी शादी हो जाएगी?

[वीरसिंह आता दिखाई पड़ता है।]

वीरसिंह : अरे, तू अब तक यहां खड़ा है। जाता है कि मारूं दो डंडे...।

[बीपत भागता है।]

माटी : साहेब, आपका नमक खाया है, भला काम क्यों नहीं करेगा? सो भी धरम का काम।

[वीरसिंह सिर पर पगडी बाध रहा है।]

माटी बाबू, अपने लिए एक साडी मागी थी। हुकुम हुआ?

वीरसिंह जाकर मालिक से क्यो नही कहती?

माटी हमरे कहे का होगा बाबू? आप ही दया करो। बाबू साहेब, जिस गाव म मालिक ठाकुर के पाव पडते है जगमग हो उठता है। अपनी-अपनी गोडी है! लोगो के आपसी झगडे मिटवाए। जनम जनम के बैर धो दिए। समझा बुझा कर लोगो के घर बसाए। खुले घरो म छान छप्पर छवा दिए। हमारी चमरटोलिया मे मालिक के पैर पड जाते, हमारे दिन भी लौट आते, हा सरकार!

वीरसिंह अरे धीरे धीरे सब हो जाएगा। अभी तो कुल छ महीने हुए ठाकुर मालिक को यहा आए। बस मन्दिर का काम अब पूरा ही होने को है। (यकायक) अरे ओ कौन जा रहा है उधर मुह छिपाए? चल इधर। काम चोर कहीं का! कहा भागा जा रहा है? अरे यह तो सुनता ही नही।

माटी अरे यह तो उत्तमा है—पढ़ने जा रहे हैं।

वीरसिंह क्यो रे, तुझे पढाई सूझी है—सारा गाव-जवार ठाकुर जी के काम काज म लगा है।

उत्तमा मैं भी अपने काम काज म लगा हू। पढने जा रहा हू।

वीरसिंह जमीदार राजा ठाकुर को जानता है कि नही?

उत्तमा भेंट हो चुकी है। उन्ह पता है मैं रोज पाच कोस दूर शहर पढने जाता हू।

वीरसिंह क्या पढता है?

उत्तमा मुझे देरी हो जाएगी।

वीरसिंह मेरे सवाल का जवाब क्यो नही देता—क्या पढता है?

उत्तमा सस्कृत पाठशाला पास कर अब हाई स्कूल मे पढता हू—साहित्य, इतिहास, भूगोल।

वीरसिंह किसका लडका है?

माटी गजाधर शुकुल के।

वीरसिंह गजाधर शुकुल भी कोई काम धाम नही करता। इनका गुजारा कैसे होता है ?

माटी भगवान करता है गुजारा—बडे धर्मात्मा पुरुष हैं।

वीरसिंह यह तो बडा चुप्पा है क्यो रे, मुझे जानता है ? अरे बोलता क्यो नहीं।

उत्तमा मुझे स्कूल पहुचने मे देरी हो रही है।

वीरसिंह बडा किस्सा बुझाता है। तुझे कोई डर नही ?

उत्तमा कैसा डर, किससे, क्यों ?

वीरसिंह . अच्छा, वाह वेट्टा !

उत्तमा अपना काम देखो मुझे अपने रास्ते जान दो।

वीरसिंह अरे यही तो मेरा काम है—पूरे गाव को काम मे लगाना।

उत्तमा पर मेरा काम है अपने आपको अपने काम मे लगाना।

[जाता है।]

वीरसिंह अरे रे रे कौन जा रहा है उधर। इधर आ (पचम आता है।) काम छोडकर किधर जा रहा है ?

पचम ठाकुर जी की कृपा से आखिर पानी बरसा ना—खेत जोतने जा रहा हू अपना, नही तो ठाकुर को मालगुजारी, भेंट-नजराना कहा से दूगा।

वीरसिंह बडा होशियार है। खूब मेहनत से खेती करो। इस साल तिगुनी पैदावार न हो तो कहना।

पचम . सब ठाकुर जी की कृपा है।

[जाता है।]

वीरसिंह चल, खडी मुह क्या देख रही है, आज मदिर की छत पडने जा रही है।

माटी जै हो ठाकुर बाबा की !

[दोनो जाते है। बाबा और बाकुल आते हैं।]

बाबा बडे खुश हो बाकुल !

बाकुल अब तो मोछ पर ताव है। ठाकुर के राज म बाकुलसिंह भी छोटे राजा !

बाबा — ठाकुर की हवेली भी बनकर तैयार हो गई।

वाकुल — भीतर नक्काशी का काम अभी पूरा नहीं हुआ है। सवा सौ कारीगर लगे हैं।

बाबा — ठाकुर की हवेली और ठाकुर का मंदिर इन दोनों में कोई फर्क है क्या ?

वाकुल — अरे, एक धर्मस्थान दूसरा कर्मस्थान !

बाबा — (हँसी)

वाकुल — तुम्हें दोनों में कोई फर्क नहीं दीखता ?

बाबा — नहीं।

वाकुल — देखो, मंदिर में छत पड़ने जा रही है—ऐसे समय अधर्म की बातें मत करो।

बाबा — सत्य कहना अधर्म है ?

वाकुल — चुप रहो ! मैं ठाकुर राजा के खिलाफ एक शब्द भी नहीं सुन सकता।

बाबा — क्योंकि तुम भी ठाकुर हो। एक ठाकुर के आ जाने से सारा गाँव अब अलग अलग जातियों में बाँट दिया गया।

वाकुल — पहले भी जातियाँ थीं।

बाबा — जातियाँ थीं कर्म और व्यवसाय के अनुसार। जातियाँ थीं पर जातियों में अलग अलग बँटे नहीं थे हम। सारा गाँव यहाँ की खेती बारी यज्ञ भूमि की तरह थी। कृषक यजमान था शेष सारे लोग पुरोहित थे। अब पुरोहित केवल ब्राह्मण है—वही ब्राह्मण जो ठाकुर का पुजारी है। गाँव का हित अब कौन ठाकुर जमींदार देखेगा। पहले के सारे पुरोहित अब जमींदार के नौकर चाकर और गुलाम होंगे—फिर गाँव कहाँ जाएगा ?

वाकुल — ये बातें अगर ठाकुर राजा के कानों में पड़ीं तो भला नहीं होगा।

बाबा — मेरा भला न होगा !

वाकुल — तुम बीते हुए जमाने की बातें कर रहे हो। देखो न ठाकुर के साथ नया जमाना आते ही सब बदल रहा है।

बाबा हां, यही तो, सब बदल रहा है।

बाकुल तो इस नये को स्वीकार करो। देखो मंदिर की छत पड रही है।

[दोनो के हाथ जुड जाते हैं। काम करती हुई स्त्रियां गा रही हैं।]

यहि ठइयां मोतिया हेराइगै हो रामा,
कहां लग ढूढ़ूं।
कोठवा पै ढूढ़ेऊ अटारिया पै ढूढ़ेऊ
ढूढि आइऊ सैंयां की सेजरिया हो रामा,
कहां लग ढूढ़ूं।
सासु जी से पूछेऊ ननद जी से पूछेऊ
सइयां से पूछत लजाय गयऊ रामा
कहां लग ढूढ़ूं

चौथा दृश्य

बाबा ठाकुर मन्दिर बनकर पूरा हुआ। मथुरा, अयोध्या और काशी से भगवान की मूर्तियां बनकर आई। तब से गांव में कई भरपूर फसलें कटी है—रबी, चैती, अगहनी। इतना अन्न तो कभी हुआ ही नहीं। पर अब जिसके नाम खेत, उसी का वह अन्न। खेत जोतने वाला अब खेत का मालिक नहीं, खेत के मालिक का नौकर हो गया, मालिक वही जो काम न करे—जो काम करे वह शूद्र—वह मालिक का दास, एक छूत एक अछूत, एक ऊंचा एक नीचा—यह नया अनुभव था उस नई व्यवस्था का।

[दृश्य उभरता है—पुजारी आते हैं।]

बाबा : पांय लागी पुजारी जी!

[गांव के लोग आते हैं।]

पुजारी : जै हो, कल्याण हो। अरे अगले मंगलवार को भगवान की मूर्ति-प्रतिष्ठा हो रही है। राम और कृष्ण, ठाकुर के दोनों स्वरूपों की प्राण-प्रतिष्ठा होगी।

बाबा : अरे पवनसुत हनुमान जी भी होंगे न ?

पुजारी : अरे भला उनके बिना कैसे पूरा होगा। अपने सिंधु ठाकुर तो विलक्षण आदमी हैं। ऐसा धर्मात्मा, कला मर्मज्ञ, प्रजापालक तो देखा ही नहीं। मन्दिर में अपने हाथों दशावतार आंके। एकदम साक्षात्। सजीव। थवई, मिस्त्री, कारीगर सब सन्न रह गए। कहीं पर राम रावण युद्ध, कहीं महाभारत का दृश्य। गोपाल जी के लिए दीपदान देखो, कितनी सुन्दर छवि है। एक गोपी के सिर पर स्वर्ण का दीपक। राम कृष्ण की आरती सामग्री रखने के लिए हल्दी की काठधानी। बाप रे बाप इतनी बड़ी हल्दी की एक गांठ। ठकुरानी नैहर से अपने साथ ले आई हैं।

बाकुल : ठकुरानी आ गई ?

पुजारी : और नहीं तो क्या ? सात नौकर, तीन नौकरानियां, सोलह कहारों की पालकी पर आई है। सोलह घोड़े, बारह हाथी की लश्कर आई है साथ।

बाबा : अभी हवेली तो पूरी बनी भी नहीं, कहां रहेंगी ठकुरानी, इतने लाव-लश्कर के साथ ?

बाकुल : अरे बड़े मस्तमौला है ठाकुर।

पुजारी : अरे उनसे बढ़कर हैं ठकुरानी। परदा नहीं करती, हां। पालकी का ओहार दरवाजा पर उठा हुआ था। जरा भी गरमी बर्दाश्त नहीं कर सकती। चन्दन चोवा लगाती हैं।

कन्हाई : बहुत सुन्दर होंगी !

बाकुल : चुप रह!

पंचम : हमें ठकुरानी देखने को मिलेगी ना ?

बाबा : अरे प्रतिष्ठा पूजा में ठकुरानी भाग लेंगी ?

पुजारी : और नहीं तो क्या, उन्हीं के साथ तो ठाकुर पहली पूजा करेंगे

मन्दिर मे। सारी तैयारी हो रही है। पूरा गाव सजाया जाएगा। सबको नए वस्त्र-आभूषण दिए जाएगे। अन्न दान होगा। भोज-भडार सबके लिए खोल दिया जाएगा। दूर दूर से पडित, विद्वान मेहमान आ रहे हैं। लीला मडली, नर्तक-गायक आएगे। सगीत-गान छा जाएगा इस धरती पर। सारे बाजे गाजे बजेंगे। सारी प्रजा उत्सव मनाएगी।

[कहते हुए तेजी से चले जाते हैं।]

बाबा • ठाकुर मन्दिर का इतना महातम ?

बाकुल • अरे धर्म ही तो मूल आधार है राजा-प्रजा सम्बन्ध का।

बाबा पर यह तो एक मन्दिर है। ऐसे तो बहुतेरे देवस्थान है।

बाकुल सुनो मैं क्षत्री हू। वही जमीदार रक्त मुझ म भी है। चाहे भगवान राम और कृष्ण हो, चाहे महावीर और बुद्ध, सब क्षत्री घरो मे पैदा हुए है। ठाकुर मन्दिर हमारे प्रताप की निशानी है।

बाबा फिर यह धर्म स्थान कहा से होगा ? यह तो अहकार की निशानी होगी।

बाकुल अहकार ही तो मूल है उसके बिना कही कुछ होता है ? सिन्धुसिंह के अहकार ने उसे यहा का ठाकुर राजा बनाया। उसी ने यहा की सोई हुई प्रजा को जगाकर इतना कमाल कर दिखाया। (रुक कर) इस जीवन के चार फल होते हैं—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। क्षत्री राजा के सिर्फ तीन फल होते हैं—धर्म, अर्थ और काम। सो ठाकुर मन्दिर से उस धर्म का फल शुरू हो गया, अर्थ और काम इसी रास्ते म हैं।

बाबा : ओ हो, तो यह रहस्य है।

बाकुल : रहस्य क्या सच्चाई है। इसमें छिपाने को क्या है ? जब राम को हमने राजा मान लिया, तो हर राजा हमारे लिए राम हो गया।

बाबा बाकुल ! तुम ठाकुर के पक्ष मे हो या ?

बाकुल . बिलकुल ठाकुर के पक्ष म हू—मतलब अपनी जात के पक्ष मे

हू। अपने पक्ष म हू।

[माटी आती है।]

माटी अरे सुना बाबू। कल से यहा रामलीला होगी। ठाकुर राजा खुद रामलीला कराएगे। गजाधर पंडित के पूत उत्तमा को राम चुना गया है। बाकुल बाबू आप लच्छिमन बनेंगे।

बाकुल राम के लिए उत्तमा चुना गया है, और मैं लक्ष्मण? राम क्षत्रिय थे।

बाबा अरे यह तो लीला है बाकुल।

माटी ठकुरानी खुद सीता बनेंगी। और रावण बनेंगे खुद राजा ठाकुर।

बाकुल अच्छा? फिर तो रामलीला जमेगी खूब।

माटी मथुरा, काशी, अयोध्या से समाजी आय गए हैं।

[वीरसिंह आता है।]

वीरसिंह अरे तुम लोग यहा क्यो बैठे हो। सारे गाव के लोग सजबज रहे हैं। आप सब को दरबार मे बुलाया गया है। कल सुबह से ही मन्दिर म भगवान प्रतिष्ठा का आयोजन शुरू होगा। सारी प्रजा को इनाम इकराम बटेगा। रामलीला शुरू हो रही है। बाकुलसिंह आप लक्ष्मण बनेंगे। ठकुरानी खुद सीता के रूप मे लीला म भाग लेंगी। राजा ठाकुर रावण बनेंगे। बाबा रामबोला, तुम्हें भी कोई पार्ट करना होगा।

बाबा क्यो नही, जो मालिक की आज्ञा होगी खुशी से करूगा। आखिर भगवान की लीला है। लीला म आप क्या बनेंगे?

वीरसिंह लीला का मैनेजर मैं ही बनाया गया हू।

बाकुल पर गजाधर के लडके उत्तमा को राम क्यो बनाया गया? इसके लिए कोई क्षत्री युवक चाहिए था।

वीरसिंह : उत्तमा से मिलकर राजा ठाकुर बहुत प्रसन्न हैं। ठाकुर न उसके साथ शास्त्रार्थ किया। उत्तमा को हिन्दी, संस्कृत और अगरेजी तीनो का ज्ञान है। रामायण, राम सीता, रावण, लक्ष्मण सबके बारे म बडी मर्म की बातें बताता रहा। ठाकुर

ने प्रसन्न होकर खुद उसके पाव छुए और घोषणा की—
उत्तमा ही लीला का राम होगा।

बाबा : धन्य हो। जब तक लीला चलेगी, उत्तमा को राम मानना होगा।

बाकुल • कितने दिनो बाद फिर इस धरती पर रामलीला होगी।

बीरसिंह : विलम्ब हो रहा है।

[सब जाते हैं।]

दूसरा अंक

[उत्तमा का घर। प्रात काल का समय। दूर से ठाकुर मन्दिर का सगीत उभरता हुआ आ रहा है। उत्तमा जमीन पर पालथी मारकर बैठा कोई धर्मग्रंथ पढ रहा है। नैवेद्य लिए पुजारी आता है।]

पुजारी देवभद्र पुराण मे लिखी भविष्यवाणी क्या झूठ होगी ? कलिकाल का भार हद से ज्यादा बढ गया, अब सत उपजेगा। राजा ठाकुर को यहा भगवान ने भेजा। पहले यहा छाया था नैराश्य, अकाल, गरीबी। सब को घेरे था फूटन पर्व। सब मे फूट। इसे काटो। इसे तोडो। उसे हडपो। किसी का कोई डर नही। मर्यादा नही। कर्म नही। अब भरोसा हुआ • ।

उत्तमा : किसे है भरोसा ? क्या है भरोसा ? किस पर है ?

पुजारी रामजी पर, तुम पर प्रभो।

उत्तमा बकवास।

पुजारी अरे क्या कह रहे है—जब तक रामलीला समाप्त नही होती, तुम उत्तमा नही, साक्षात राम हो राम !

उत्तमा अपने से मैं दूसरे का भ्रम कैसे कर सकता हू, मैं जो हू, अभी तो उसी को नही जान पाया।

[पुजारी बढ़कर चरण स्पर्श करता है। नैवेद्य चढाता है।]

पुजारी जै जै राम। जीवन दान के साथ ही साथ ईश्वर हमें पृथ्वी के आनन्द यज्ञ मे मिलाता है। पर ज्ञानमार्गी इस रहस्य को स्वीकार नही कर पाते। वे प्रत्येक वस्तु को तर्क से देखना

चाहते हैं। उन पर तुम कृपा करो, हे राम ! उन्हे सद्बुद्धि दो प्रभो !

उत्तमा : पर राम कौन है ?

पुजारी : तुम्ही हो साक्षात् राम। हे मेरे राम !

उत्तमा : मनुष्य की लीला मुझे राम कैसे बना सकती है ? मैं राम का महज अभिनेता हू।

पुजारी : राम ! राम ! राम ! यह कह कर मेरे विश्वास की परीक्षा मत लो राम। अभिनेता नाटक मे होता है। लीला मे मनुष्य ही भगवान हो जाता है। तभी तो वह लीला करता है। इतना ही नही, लीला देखने वाले भी दर्शक नही रह जाते, वे सब ईश्वर रस हो जाते हैं। रसो वैसः का यही रहस्य है। ईश्वर का अवतार होता है। यह दर्शन इसी लीला से उपजा है। प्रभु का अवतार किसी युग, काल विशेष मे ही होकर नही रुक जाता। वह अवतार नित्य होता है। हर लीला मे वही अवतार लेते है, *नित्य अवतार। हे प्रभु, तेरी लीला अपरम्पार।* मनुष्य यहा ईश्वर हो सकता है। उसी के माध्यम से ईश्वर का हम दर्शन करते हैं—यही तो सनातन धर्म का महान रहस्य है।

उत्तमा : पर लीला तक मे ही भगवान का अवतार सीमित क्यो ? वह शेष जीवन मे क्यो नही ?

पुजारी : जो सम्पूर्ण जीवन मे आनन्द की लीला देखता है उसके लिए सब कुछ, सर्वत्र ईश्वरमय है। सब मे वही अवतरित है।

उत्तमा : पर जीवन मे आनन्द कहा है ? जो नहीं है, उसे देखना क्या यह अन्धविश्वास नही ? यथार्थ को लीला मानकर यथार्थ से क्या भागना नही है ?

पुजारी : शिव, शिव, शिव ! राम के मुह से यह भाषा ! नहीं, नही, मेरी और परीक्षा मत लो राम। निर्बल के बल राम, मुझ पर कृपा करो।

उत्तमा : निर्बल पर राम कभी कृपा नही करते। यह जगत, ससार

लीला नहीं है। कठोर यथार्थ है। यहां सब कुछ नियम से चलता है। यहां लीला और आनन्द कहां है ?

पुजारी : जहां से सारे नियम आते हैं, जिसके अमोघ शासन से सूर्य, चन्द्र उदित अस्त होते है, जिसके नियम से वायु और मृत्यु भी मुक्त नहीं है, उसी महाशक्ति का नाम ईश्वर है। ईश्वर के आनन्द को जो सर्वत्र नहीं देख पाता, वह केवल भय में जीता है।

उत्तमा : हां, यही यथार्थ है, निन्नानवे प्रतिशत मनुष्य भय में जीता है।

पुजारी : जो जानते हैं भय के बीच अभय है, नियम के बीच आनन्द अपने आप को प्रकाशित करता है, वही सारे भ्रम, बंधन को पार कर आगे निकल जाते है।

उत्तमा : यह ऊंचा दर्शन, महाज्ञान, लाखों-करोड़ों में शायद एक जन के लिए हो। मनुष्य अभी केवल यथार्थ है—काम और अर्थ में फंसा हुआ, आप उससे अध्यात्म की बातें करते हैं ? राजा ठाकुर के यहां आने से पहले पुजारी, तुम्हारा यह अध्यात्म, यह चरम दर्शन कहां था ! तुम्हारी यह भावा, यह ज्ञान, पहले कहां था ? ईश्वर नहीं, मूल राजा है। वहीं से यह सब कुछ निकला है।

पुजारी : हाथ जोड़ता हूं राम। ये बातें तुम राजा ठाकुर के सामने मत कहना। वचन दो राम। शरण में हूं।

[विराम]

उत्तमा : जब तक लीला समाप्त नहीं हो जाती, मैं इसी दी हुई राम की मर्यादा में ही रहूंगा।

पुजारी : जै हो राम। जै जै राम।

[जाने लगते हैं सहसा लौट कर]

पुजारी : मेरी बात का बुरा मत मानना राम !

[जाते-जाते फिर लौटते है।]

पुजारी : भविष्य मंगलमय है राम।

[जाकर फिर लौटते हैं।]

पुजारी : आज रात तो पंचवटी मे राम की लीला है। ठकुरानी साक्षात् जानकी हैं। अच्छा अब चलूगा। विलम्ब हो गया (जाकर फिर लौटना) अरे चरण स्पर्श करना तो भूल ही गया। (करता है) यही तो बात है, भावना मे बह जाता हू। अब आज्ञा दो राम।

[जाते हैं। गंगाजली आती है।]

गंगाजली · चरण छूती हू भगवान के।

उत्तमा : मैं कहा का भगवान ? मेरी हंसी मत करो। किसी के कहने या मानने से कोई भगवान नही हो सकता।

गंगाजली : जब पत्थर की मूरत भगवान हो सकती है तो भला तुम क्यो नही हो सकते राम !

उत्तमा पत्थर निष्प्राण है, उसे कुछ भी माना जा सकता है।

गंगाजली : नही, नही, ऐसा अपने मुख से मत कहो राम। मैं तुम्हारे दरबार मे एक भीख मागने आई हू राम। तुम्हे मालूम है— मैं सवा सौ रुपये मे खरीदकर इस गाव मे बहू बनाकर ले आई गई थी। कुल सोलह साल की तब उमर थी मेरी। भभुआडीह का वह शिवमगल तिवारी मुझे फुसलाकर बम्बई भगा ले गया। तुम जानते हो राम, फिर मेरे लिए कितना क्या-क्या नही हुआ। तीन साल तक मुकदमा चला। तब से पति के घर मे मेरी क्या दुर्दशा है, तुम्हें सब पता है। मुझे पतिता की तरह घर मे रखा जाता है। मुझसे जानवर जैसा व्यवहार किया जाता है।

[रो पडती है।]

उत्तमा : ठाकुर के दरबार मे न्याय मागने नही गई ?

गगाजली : मेरी कहा इतनी हिम्मत ! ठाकुर राजा अपनी क्षत्री जाति की तरफदारी करेगा कि···।

उत्तमा : क्षत्रिय क्या तुम नहीं हो ?

गगाजली : मैं कुछ भी नही हू राम। वह अहिल्या पति के शाप से पत्थर हो गई थी। मैं गगाजली इस गाव मे माटी और राख भी नहीं !

[रोती है।]

उत्तमा धीरज बाधो गगाजली। तुम्हें न्याय मिलेगा।

गगाजली बस, यही भीख मांगने आई हू तुम्हारे दरबार में राम। जैसे अपने चरणो से छूकर उस अहिल्या को तारा, मुझे भी तार दो पतित पावन।

[रो रही है। उत्तमा आकर धीरज बधाता है।]

उत्तमा अगर मेरे स्पर्श से तुम्हारा कल्याण हो जाए तो लो, मैं स्पर्श करता तुम्हें। तुम्हारे चरणो को अपने माथे से छूता हू।

[गगाजली डर कर भागती है।]

गगाजली नही नही। मेरा सर्वनाश होगा। मैं तो तुम्हारे चरणो मे माथा छुलाकर पवित्र हो जाना चाहती हू।

उत्तमा फिर ऐसा करो गगाजली। आज रात की रामलीला म यह कहते हुए तुम दौडकर मेरे पास आ जाना—'अहिल्या की तरह गगाजली का उद्धार करो राम' मैं सबके सामने तुम्हें अपने चरणों से स्पर्श कर ।

गगाजली (अति प्रसन्न) धन्य हो राम। जै हो पतित पावन की! जै हो!

[भागती है।]

उत्तमा (स्वगत) ये कैसी कैसी कथाए हमारे दिल और दिमाग म बैठा दी गई हैं? अपने अनुरूप राम और शिव की कथाए गढकर स्वय अपने चरित्र को प्रकट करते हैं! सती के शव को अपने कधे पर लिए शकर जी घूमते हैं, क्योंकि यहा का मनुष्य अपने मरे हुए निर्जीव अतीत को अपने कधे पर ढोता रहता है। यह विपत्ति म रोता है, इसीलिए उसके राम रोते हैं। वह अत्याचार, अन्याय सहता है, तभी उसकी जानकी को वही स्वीकार करना पडता है। शायद तभी जीवन, कथा नही, पत्थर नहीं है। यह ऐसी कोई वस्तु नही, जो इन धर्म-कथाओ द्वारा समझी जा सके। इसे दूसरे के अनुकरण या किसी पूजा प्रार्थना से नहीं जाना जा सकता। इसे तभी जाना जा सकता

है, जब हम खुद जीवित हो। पर कैसे ?

[बीपत, माटी के साथ, माटी का पति गोबर भी आता है।]

माटी दुहाई राम की। हमारी कुछ फरियाद है।

गोबर हमारे पूत बीपत की कही शादी कराओ भगवान।

माटी इस दहिजरे के पूत को कोई अपनी बेटी व्याहने को तैयार नही होता।

बीपत इनकी शादी तो खुद नही हुई है, मेरी का कराएगे, हा।

माटी चुप रह मुहजरा।

गोबर *भगवान है, शाप दे देंगे रे।*

बीपत : अरे उत्तमा भैया के साथ हम बहुत गुल्ली-डडा खेले है। बचपन म जब यह भिक्षा मागने जाते थे, मैं जगल म बकरी चराता था। इन्हें बकरी का दूध पिलाया है। यह मुझे किस्सा सुनाते थे। एक रहा राजा। ओकरे तीन लरिके। जब तीनो लरिके, मतलब राजकुमार, शादी लायक हुए तब राजा ने कहा—आपन आपन बाण चलाओ। जेकर बाण जहा गिरी वही तेकर शादी। बडिके औ मझिलिके कै बाण गिरे जाइके राजमहलो मे। छोटेके कै बाण गिरा पेड के खोडरे म। सो उसकी शादी हुई उस पेड की बदरिया से

माटी चुप रह!

गोबर बडा आया बकर बकर करने!

बीपत कोई मैं झूठी बात कहि रहा हू भइया?

गोबर भइया नही, राम कह राम।

बीपत हा नही तो, मैं नही जानता राम वाम। जिसे कभी देखा नही कैसे मानू।

उत्तमा बिलकुल ठीक कहता है।

बीपत मैं किसी अधी, लूली, लगडी स बियाह नहीं करूगा हा, सुनि लो। जैसी ठकुरानी हैं, उसी तरह की मेहरारू से शादी करूगा। नाही तो उत्तमा भइया की तरह कुवारा रहूगा, हा।

बात कही साफ।

[मा बाप दोनो उसे दौडा लेते हैं।]

माटी अरे तेरे मुह पर आग लागे! मुहफोसा! ठाकुर सुनेंगे तो तेरी खाल खिचवा लगे।

गोबर उहै कहावत है—सोवें कथरी गोनरी, सपना दखे धौराहर का!

[उसे दौडाते हुए दोनों जाते हैं।]

दूसरा दृश्य

[मच पर रामलीला। राम (उत्तमा) और सीता (ठकुरानी) बैठे हैं। दाईं ओर मच पर खडे हैं नट और सूत्रधार, लीला गायन शुरू करते है।]

दया निधि तोरी दया है अपार।
प्रभु तुम अगम अगोचर अविकल हो,
चर अचर सकल के तुम्ही अधार।
मोह पार उतार भवसागर धार
प्रभु तोरी दया है अपार।
दीनबन्धु दशरथ नदन जनक सुता के गुन गावें
हरसावें सुख पावें हम पार उतार।
प्रभु तोरी दया है अपार।

सूत्रधार आनन रहित सकल रस भोगी
बिन वाणी वक्ता बड योगी।
तनु बिनु परस नयन बिनु देखा
गई घ्रान बिन वास अदोषा।
पद बिनु चलै सुनै बिनु काना
कर बिनु कम करै विधि नाना।

नट एक अवधेश राम दूजे हैं परसुराम
तीजे बलराम राम तीनो ही य राम हैं।

तीनो से निराला आला एक राम और भी है
हरिहर आदि जाके अगणित नाम हैं।
सकल जगत को रमाता है जो अपने मे
रमा है जो रोम रोम व्याप्त सर्वधाम है।
साहु टेक राखन को रामायण भाखन को
कीर्ति रस चाखन को लाखन प्रणाम है।

[ठाकुर पुजारी क साथ मच पर आकर राम और सीता की पूजा करते हैं और आरती उतारत हैं। पूजा आरती के बाद नट और सूत्रधार सामने आते हैं।]

सूत्रधार हे भाई, देखो आज की रात कितनी सुन्दर है। पवित्र है विचित्र है जिसकी प्रशसा नही हो सक्ती।

नट मित्र! मेरी इच्छा है कि ऐसे सुन्दर सुहावने समय मे श्री रामचन्द्र की लीला का अगला अध्याय खेला जाए।

सूत्रधार लीला का वह कौन सा अध्याय है आज?

नट पचवटी।

सूत्रधार पर लीला कौन-सी?

नट शूर्पणखा लीला।

सूत्रधार धन्य है धन्य है। तेरी बुद्धि और शुद्धि को, जो इस समय ऐसी पवित्र लीला का स्मरण किया। अब यही लीला खेलकर अपनी व सबकी आत्माओ को नव जीवन प्रदान करेंगे। इस लोक म भी तरेंगे। परलोक म भी तरेंगे।

नट तो अब विलम्ब क्यो?

सूत्रधार कोई विलम्ब नही। सब तैयार है।

[दोना मच ठीक करते हैं। राम और जानकी कुर्सी से उठकर खडे होते हैं। लक्ष्मण (बाकुल) आते हैं।]

राम हे लक्ष्मण! तुम अब तक कहा थे? इतने विलम्ब से क्यो आए?

लक्ष्मण मेकअप करा रहा था। आज मैं मोछ लगाना चाहता था, पुजारी जिद कर रहे थे—मोछ नही लगेगी। मैं कह रहा

था—आज लगेगी, जरूर लगेगी।

पुजारी : (किनारे से) अरे यह क्या कर रहे हो? लीला शुरू हो गई है। अपनी वार्ता बोलो।

[हाथ जोड़ कर क्षमा मांगते हैं।]

राम : (खड़े होकर) हे लक्ष्मण! तुम अब तक कहां थे?

लक्ष्मण : आज घर से ही आने में देर हो गई।

पुजारी : (गुस्से में ताली बजाकर) क्या करते हो? लीला की अपनी वार्ता बोलो।

लक्ष्मण : हां, हां बोलता हूं।

पुजारी : बोलो न।

लक्ष्मण : राम नहीं, जानकी बोलेंगी कि हे लक्ष्मण, तुम अब तक कहां थे, तब मैं बोलूंगा। (उत्साह में आकर) जहां जो बात फबती हो, वही कहना। वही कहना। किसी के रोब में दबकर कुछ का कुछ नहीं कहना।

पुजारी : लक्ष्मण! चुप रहो। राम को बोलने दो।

[संगीत बजकर रुकता है।]

राम : अहा! आज पंचवटी कितनी सुहानी है!

सीता : सारी प्रकृति मनभावनी है।

राम : क्यों भाई लक्ष्मण?

लक्ष्मण : बेशक! इसमें भी क्या कहना है।

राम : जटाएं कलियों ने बांध रखी हैं फूल का सर खुला है। कमल का पत्ता पड़ा है जल पर; मगर यह बंधकर खुला है। बड़ा ही बारीक लेख है ये पर असर खुला है। खुली हुई हों जो अपनी आंखें तो सारा त्रिभुवन खुला है!

सीता : वत्स लक्ष्मण! भला बताओ तो कलियों ने जटाएं क्यों बांध रखी हैं?

लक्ष्मण : मां! ये ब्रह्मचर्य व्रत धारण किए हुए हैं अपने बचपन में, वो तत्त्व संग्रह कर रही हैं जो इन्हें कली से पुष्प बनाएगा। अपनी सुगन्धि के साथ दूसरों को भी सुख पहुंचाएगा।

तीनों से निराला आला एक राम और भी है
हरिहर आदि जाके अगणित नाम है।
सकल जगत को रमाता है जो अपने मे
रमा है जो रोम रोम व्याप्त सर्वधाम है।
ताह टेक राखन को रामायण भाखन को
कीर्ति रस चाखन को लाखन प्रणाम है।

[ठाकुर पुजारी के साथ मंच पर आकर राम और सीता की पूजा करते हैं और आरती उतारते हैं। पूजा आरती के बाद नट और सूत्रधार सामने आते हैं।]

सूत्रधार हे भाई, देखो आज की रात कितनी सुन्दर है। पवित्र है, विचित्र है जिसकी प्रशसा नही हो सकती।

नट • मित्र! मेरी इच्छा है कि ऐसे सुन्दर सुहावने समय मे श्री रामचन्द्र की लीला का अगला अध्याय खेला जाए।

सूत्रधार लीला का वह कौन सा अध्याय है आज ?

नट पचवटी।

सूत्रधार पर लीला कौन-सी ?

नट शूर्पणखा लीला।

सूत्रधार : धन्य है धन्य है। तेरी बुद्धि और शुद्धि को, जो इस समय ऐसी पवित्र लीला का स्मरण किया। अब यही लीला खेलकर अपनी व सबकी आत्माओ को नव जीवन प्रदान करेंगे। इस लोक म भी तरेंगे। परलोक म भी तरेंगे।

नट तो अब विलम्ब क्यों ?

सूत्रधार : कोई विलम्ब नही। सब तैयार है।

[दोनो मच ठीक करते हैं। राम और जानकी कुर्सी स उठकर खडे होते हैं। लक्ष्मण (व्याकुल) आते हैं।]

राम हे लक्ष्मण! तुम अब तक कहा थे? इतने विलम्ब से क्यो आए ?

लक्ष्मण 'मेकअप' करा रहा था। आज मैं मोंछ लगाना चाहता था, पुजारी जिद कर रहे थे—मोछ नही लगेगी। मैं कह रहा

था—आज लगेगी, जरूर लगेगी।

पुजारी . (किनारे से) अरे यह क्या कर रहे हो? लीला शुरू हो गई है। अपनी वार्ता बोलो।

[हाथ जोड कर क्षमा मागते हैं।]

राम (खड़े होकर) हे लक्ष्मण! तुम अब तक कहा थे?

लक्ष्मण आज घर से ही आने मे देर हो गई।

पुजारी : (गुस्से मे ताली बजाकर) क्या करते हो? लीला की अपनी वार्ता बोलो।

लक्ष्मण : हा, हा बोलता हू।

पुजारी . बोलो न।

लक्ष्मण राम नहीं, जानकी बोलेंगी कि हे लक्ष्मण, तुम अब तक कहा थे, तब मैं बोलूगा। (उत्साह मे आकर) जहा जो बात फबती हो, वही कहना। वही कहना। किसी के रोब मे दबकर कुछ का कुछ नही कहना।

पुजारी लक्ष्मण! चुप रहो। राम को बोलने दो।

[संगीत बजकर रुकता है।]

राम . अहा! आज पचवटी कितनी सुहानी है!

सीता सारी प्रकृति मनभावनी है।

राम क्यो भाई लक्ष्मण?

लक्ष्मण . बेशक! इसमे भी क्या कहना है।

राम जटाए कलियो ने बाध रखी हैं फूल का सर खुला है। कमल का पत्ता पड़ा है जल पर, मगर यह बधकर खुला है। बड़ा ही बारीक लेख है ये पर अक्षर खुला है। खुली हुई हो जो अपनी आखें तो सारा त्रिभुवन खुला है!

सीता . वत्स लक्ष्मण! भला बताओ तो कलियो ने जटाए क्यो बाध रखी है?

लक्ष्मण मा! ये ब्रह्मचर्य व्रत धारण किए हुए हैं अपने बचपन मे, जो तत्त्व सग्रह कर रही हैं जो इन्हे कली से पुष्प बनाएगा। अपनी सुगन्धि के साथ दूसरो को भी सुख पहुचाएगा।

सीता इधर कमल का पत्ता कह रहा है कि दुनिया म रहो तो यो रहो कि दुनिया तुम्हे पकड न ल।

राम पास जब बैठो तो बैठो इसके तेवर ताड कर, बैठने का डर नही उठो तो दामन झाड कर। मालोजर मे खेलते हैं, मालोजर छूत नही। जिन्दगी जल म गई, जल को मगर छूते नही।

लक्ष्मण और देखिए फूलो का स्वभाव तो मशहूर है। पर इनम सत्य बोलने की शक्ति भी जरूर है।

सीता कैसे ?

लक्ष्मण गेंदे के फूल ने कभी चमेली की गध नही चुराई, चमली से कभी गुलाब की खुशबू नही आई।

सीता कैसा ही वक्त आए, वन चाहे जो जान पर, जो कुछ छुपा है दिल मे, वही है जुबान पर।

राम य तो गिरे हुए इनसान ही करते हैं, अपनी आत्मा से घात, कि जैसा समय, वैसी बात।

लक्ष्मण अगर है सत्यता तो बात हो नही सकती हलकी। बडा बल आत्मबल है, इसके सामन किसी की नही चलती।

[सहसा नाचती हुई शूर्पणखा आती है।]

सीता ओ हो ! यह कौन है ?

लक्ष्मण लगती कोई भूत है।

राम नही, प्रकृति की अनोखी भूख है।

[नाचती हुई रुक कर]

शूर्पणखा (राम को देखकर) इनकी सूरत पर नजर आता है, कुल भी, रूप भी, तेज कहता है कि योगी भी है और भूप भी।

[नाचती हुई गा पडती है।]

हाय ! तो पै नजर लागी।
चपल लोचन तेरे बेचैन बेआराम करते हैं।
य किस वन के हिरन हैं जो वधिक का काम करते हैं—
हाय, तो पै नजर लागी।

लक्ष्मण • बस बस • !

शूर्पणखा हे मदनमूर्ति पुरुषो ! कौन हो ?
राम हम अयोध्या नरेश राजा दशरथ के पुत्र है।
शूपणखा हाय कितने सुन्दर हो। भला नाम क्या है ?
राम मेरा नाम राम है। यह लक्ष्मण है। यह मेरी स्त्री सीता।
शूपणखा मैं इसका नाम नही पूछती। ना मैं इसे जानना ही चाहती हू छी।
राम तुम कौन हो ?
शूपणखा मैं लकपति रावण की बहन हू।
लक्ष्मण यहा कैसे आई ?
शूपणखा मुझे हासिल है आजादी कही भी आने जाने मे। लगाती रहती हू मैं दिन रात चक्कर जमाने म।
राम अच्छा। तुम किसकी पत्नी हो ?
शूपणखा सुनो मैं हू कुमारी। पति की ही तलाश म यहा पधारी।
राम अरे अब तक तुम्हे पति ही नही मिला ?
शूपणखा देव किन्नर मेरे पति बनें इतनी उनकी औकात कहा ? गधर्वों मे वह हुस्न कहा, यह रूप कहा, यह गात कहा ? हो लाख हसीन जमाने म, लेकिन फिर भी वह बात कहा ? हा तुम कुछ-कुछ इस काबिल हो जो मेरा पति बनो और प्यार करो। मैं तुमको अगीकार करू, तुम मुझको अगीकार करो।

[नाचती है।]

राम देवी हम पर दया करो। इस बाधा को छोड अपनी राह लगो।
शूर्पणखा ओह मुझे धिक्कारते हो।
राम नही नही, हम क्षमा मागत हैं।
शूपणखा ओह ! तुम्हें अपनी किस्मत पर नाज करना चाहिए। अपने नसीब पर इतराना चाहिए।
राम तुम सब प्रकार से श्रेष्ठ हो भद्रे ! पर मैं विवाहित हू। सीता मेरी पत्नी है।
शूर्पणखा ओ हो तुम्हारे पिता ने तो तीन विवाह किए तुम दो से ही

घबराते हो !

राम — क्षमा हो देवि, सीता के अलावा मैं किसी और स्त्री को स्वीकार नहीं कर सकता।

शूर्पणखा — आ हो, तो मैं इसे अभी मार डालती हू।

राम — इतना कष्ट उठाने की क्या जरूरत ? वह देखो मेरे छोटे भाई लक्ष्मण। इनके पास स्त्री नहीं है। यह तुम्हारे स्वामी होने योग्य हैं।

शूर्पणखा — (लक्ष्मण से) सुना, तुम्हारे भाई क्या कहते हैं ?

लक्ष्मण : मैंने सब कुछ सुना। पर मैं तो उन्हीं का दास हू।

शूर्पणखा — मैं तुम्हारी दासी बनूगी।

लक्ष्मण — असम्भव है गऊ आकर बचे इक साप के बिल मे,
अपावन है जो उतरेंगे इस नापाक मजिल मे।
वन के दासी राह क्यो स्वच्छन्दता की बन्द की,
जाओ स्वामी के निकट यदि इच्छा है आनन्द की।

शूर्पणखा . (गाती नाचती राम के पास) हे राम मत करो परेशान !
तुम चन्द्र मैं चकोर दिल बेकरार है,
मझधार म लगा दो मेरी नाव पार है।

राम — हे प्रिया सुकुमार ! तुम लक्ष्मण के पास जाओ। वही तुम्हारी सब अभिलाषा पूरी करेंगे।

शूर्पणखा — (नाचती गाती लक्ष्मण से) मानो जी मानो, मुझे प्रीति मे फसाने वाले।
दिल को चुराने वाले, बातें बनाने वाले।
हम को रिझाने वाले।
मानो जी मानो मुझे प्रीति म फसाने वाले।

लक्ष्मण — तुमसे पहले जहा मैं पराधीन हू
मेरे ऊपर करो अब कृपा की नजर
जाओ श्रीराम पर जाओ श्रीराम पर
बस वहीं सब करेंगे तुम्हारी फिकर।

[अचानक पीछे से वाकुल की पत्नी मैना गुस्से मे बेलन

लिए आती है।]

मैना देखूं तो कैसी है वह शूपणखा मुहझौंसी, जो मेरे मरद को मुझसे छीन रही है।

पुजारी (रोकते हैं) अरे रे रे, क्या करती है? देखती नहीं, रामलीला चल रही है।

मैना वही तो देखन आई हू। कहा है वह शूर्पणखा, उसकी नाक मैं कूचगी इसी बेलना से।

[शूर्पणखा डर के मारे भाग गई है। बाकुल भयभीत राम सीता के पीछे छिप गए हैं।]

मैना कहा है मेरा मरद? वह मुई किधर गई?

बाकुल अरे तू कहा आ गई इधर? भागती है कि ··

मैना अरे बड़ा आया हुई हुई नरक। मेरे सामने आ तो देख। बड़ा आया लीला करने। लछमन बनिके लड्डू खाए चले है। मैं खिलाऊं लड्डू!

बाकुल हे राम! मेरी औरत से मुझे बचाओ। हे तिरिया! घर जाओ। घर जाओ। मैना प्यारी घर जाओ।

राम हे मैना। यहा से जाओ। अपने मरद को इतना मत सताओ। सीधे घर जाओ।

मैना मैं कहे देती हू हा, कोई हमरे बीच मा बोले नाही। वह शूर्पणखा किधर गई? तोड़ू उसकी कमर, फोड़ू उसकी नजर।

बाकुल अरे ई तो लीला की भाषा बोलन लगी। सुन मैना, वह गई। अब तू यहा से जा। वरना तू लक्ष्मण का क्रोध नहीं जानती। मैंने ताड़का जैसी राक्षसिनी को खदेड़ा। उसके भाइयो का हाथ मरोड़ा। परशुराम के छक्के छुड़ाए। जिसे आना हो मेरे सामने आए।

मैना अच्छा! रुका, आवत बाटी। अब भागत कहां? अरे मैं कहू —सीधे से अपने घर चलो। लुकाए से काम नहीं चली!

बाकुल हे मातु जानकी! इससे मुझे बचाओ। इसे किसी तरह घर

मिजयाओ, नहीं तो लीला नहीं गेर देगी।

गीता — हे बहिन ! लीला म विघ्न मत डालो।

मैना — सुनो ! हम बात नहीं माफ ई औरत मरद के बीच का मामला है। कोऊ हमर बीच मा ना पड़े, हां।

वीरसिंह — (परदे के पास से) मैंम मरद हो वाकुलसिंह, पसापर डाट नहीं सकते। ऐसी बदजात औरत को यहा से भगा नहीं सकते। तो फिर रावण की बहिन शूर्पणखा की नाक क्या काटोग ? हम सब मरदो की नाक कटा डालोगे !

वाकुल — (उत्साह से) जो प्रभु का अनुशासन पाऊ, कदुक सम ब्रह्माड उठाऊ।

त्रिया चरित्र समझै नहीं कोय,
बिना दड सीधी नहिं होय।

सावधान ! या तो यहा से फौरन चली जा, वरना…

मैना — वरना क्या ? बोल वरना का करयो तू ?

पुजारी — हे ! तू यहा से जाती है कि नहीं ?

मैना — नाही। अपने मरद को यहा से लैके जाबू ।

वाकुल — पर हे हतभागिनी, अभी तो मुझे शूर्पणखा की नाक काटनी है।

मैना — अब तेरी नाक मैं काटूगी।

वीरसिंह — वाह ! यह विचार उत्तम है। हमें तो नाक कटन से मतलब है, चाहे शूर्पणखा की हो, चाहे तुम्हारी हो या चाहे लक्ष्मण की हो।

पुजारी — नहीं, नाक शूर्पणखा की ही कटेगी। यह लीला है कि कोई मजाक है !

वीरसिंह — तो इसे ही शूर्पणखा क्यो न समझ लिया जाए ?

वाकुल — बिल्कुल समझ लिया जाए।

पुजारी — तो चलो ! इसीकी नाक काटो। लीला म विलम्ब हो रहा है।

वाकुल — मैं और इसकी नाक काटू ? बाप रे। राम ! हे कृपानिधान ! तुलसीदास को मैं हाथ जोडकर मना लूगा। हे धनुषधारी

महावीर राम ! लक्ष्मण की जगह तुम्ही इसकी नाक काट दो। मैं तुम्हारी जगह रावण वध का काम पूरा कर दूंगा।

राम नही बन्धु ! यह मुझसे नही होगा।

बाकुल हे सीता मा ! मुझ पर दया करो।

सीता अब एक ही उपाय है लक्ष्मण ! तुम इसे घर पहुचाकर सकुशल वापस आओ।

बाकुल और रास्ते मे इसने मेरी नाक काट ली तो ?

सीता जाओ वीर लक्ष्मण, धैर्य रखो। ऐसा नही होगा।

मैना (हाथ पकड कर) हे ! अब सीधे घर चलो।

लक्ष्मण और शूर्पणखा लीला ?

मैना सीधे चलबो कि नाही ?

[खीचकर बाहर ले जाती है। बाहर शोर होता है। लक्ष्मण अपनी कटी नाक पकडे आते हैं।]

राम • हाय लक्ष्मण ! यह क्या हुआ ?

सीता हाय ! किसने काट ली तुम्हरी नाक ?

लक्ष्मण • नाक ही कटने से मतलब था। मैंने नाक कटा ली। ताकि आगे लीला म कोई विघ्न न हो।

[सगीत बजना शुरू होता है। दोनो गायक आकर गाते हैं।]

लाल लाडिले लखन हित हो जन के
सुमरे सकटहारी सकल सुमगल कारी।
पालक कृपालु अपने पन के।
धरती धरनहार भजन भुवनभार
अवतार साहसी सहस फन के॥

[गायक जाते हैं।]

राम • हे लक्ष्मण ! अब हमे यहा से आगे चलना चाहिए।

लक्ष्मण जी हा आय ! फौरन चलना चाहिए।

[तीनो चलते हैं।]

सीता सूर्य अस्ताचल को चला गया। जगल मे चारो ओर कितनी

शांति है !

राम : सीते ! तुम्हे जगल मे भय नही लगता ?

सीता : आर्य के रहते हुए मुझे कैसा भय ? धनुषधारी वीर लक्ष्मण जिसके देवर हो, उसे भला कैसा भय ?

राम : पर लक्ष्मण तो स्त्री देखकर भयभीत हो जाते हैं।

लक्ष्मण : आर्य ! मेरा परिहास मत कीजिए। विश्वास रखिए, अब मैं तुलसीदास का लक्ष्मण हू। वीर हू। बलवान हू।

[तीनो चलते है। वाद्य सगीत उभर रहा है। फिर अचानक गगाजली दौडी आकर मच पर गिर पडती है।]

पुजारी : अरे रे रे। यह औरत कहा से फाट पडी ?

वीरसिंह : आज लीला मे कितना विघ्न हो रहा है।

पुजारी : अरे यह तो गगाजली है ! बेहोश पडी है।

राम : यह कलकिनी अहिल्या है। शिला खण्ड। पत्थर की मूर्ति यही नारी है।

पुजारी : आज की लीला का यह दृश्य नही है।

राम : मैं अपने चरण स्पर्श से इसे शाप मुक्त करता हू। इसके कलक को दूर करता हू।

पुजारी : नही, नही। यहा ऐसा नही है।

वीरसिंह : सगीत बजाओ, सगीत ! पर्दा ! पर्दा गिराओ !

गगाजली : (उठकर) धन्य हो राम। तुम्हारी जै हो !

[सगीत के साथ पर्दा गिरता है।]

तीसरा अंक

बाबा जो कुछ इस गाव जवार मे घटा, उसकी कहानी इस धरती पर अमिट है। मेरी जबान पर ठाकुर राजा के उस जमाने की बातें रह गई हैं। किसने नही सुनी है उस जमाने की बात। जब ठाकुर की हवेली के सामने चूल्हे खोद कर रसोई बनती थी। भयकर बाढ आई थी सरजू नदी की। बेघरबार हुए सैकडो लोगो को मुफ्त खिलाया जाता था। जैसे ही बाढ हटती, सारी प्रजा खेती के काम पर जुट जाती। ठाकुर की जै-जैकार करके लोग दिन-रात मेहनत करते। दुगुनी-तिगुनी फसल होती। फिर गाव-गाव से ठाकुर की हवेली, बारादरी और बैठकखाने मे लोगो का आना जाना और बढ जाता। आज रामलीला। कल भरतमिलाप। परसो कृष्णलीला। अगरेज कलक्टर आता। रुपये पानी की तरह बहते। लोग डर के मारे थर-थर कापते। ठाकुर की आज्ञा के सामने कभी कोई सिर नही उठा सकता। ठाकुर के साथ अगरेज अफसर जब कभी इधर से गुजरता तो सारी प्रजा हाथ जोड़े सिर झुकाए रास्ते पर खड़ी रह जाती। अगरेज मेम के साथ ठकुरानी चलती तो लोग आख फाड़े देखते रह जाते। जब-जब अगरेज का दौरा होता, तब-तब दुगुनी मालगुजारी वसूल की जाती। लोग अपना सब कुछ बेचकर मालगुजारी अदा करते। मैनेजर वीरसिंह का लपलपाता हुआ हटर! दिन-रात का बेगार, आतक, शोषण, अत्याचार, सब कुछ सहकर

प्रजा राजा ठाकुर को धर्म का अवतार मानती। ठाकुर का घर, उसका दरबार केवल एक स्थान नहीं था, एक अनुष्ठान बन गया था। ठाकुर का नाम भगवान का नाम था। उसी नाम से गावों की सारी समाजनीति चलती। मान-मर्यादा, आचार-व्यवहार, विचार-विश्वास, सब कुछ, सारे जीवन का केन्द्र वही राजा ठाकुर था।

पहला दृश्य

[गाव के चबूतरे पर, आसपास लोग बैठे हैं। सध्या समय।]

बाकुल : ससुराल गया था एक शादी मे। वाह वाह ! क्या भोजन बना था, जैसे ठाकुर की हवेली का भोजन।

पंचम भाई, कितना भी हो, ठाकुर की हवेली जैसा व्यजन कैसे हो सकता है भला। अगरेज सिपाही अफसर आया था पिछले दिनो। तराई के जगल मे शिकार खेलने गया। इस बार ठाकुर की बदूक ढोने मैं गया था। जगल मे जो गोश्त बिरयानी बनी थी, भला उसका भी कोई मुकाबिला है।

बीपत : अरे साहेब, माटी एक दिन ऐसन मछली बनाइस कि जैसे ठाकुर के हवेली की।

कन्हाई अब सुनो। कहा राजा भोज कहा गांगू तेली।

[हसी]

बाकुल : भाई एक बात है—बीपत की जो दुल्हन आई है, उसकी आखें ठकुरानी की आखों जैसी हैं।

कन्हाई : अच्छा ! अब तक मैंने नही देखा।

बाकुल : फिर क्या देखा। बडी गजब्बा है बीपत की दुल्हनियां। क्या नाम है रे ?

बीपत : गोपी।

पंचम : वाह ! ऊ गोपी ई कृष्ण कन्हैया।

बाकुल : अरे गोपी अभी ठाकुर की हवेली में गई या नहीं रे ? कहीं उस पर बीरसिंह की नजर न लग जाय।

शेख मौला : बड़ा बदमाश आदमी है। राजा ठाकुर का यखलाक जितना अच्छा है उतना ही बीरसिंह लुच्चा नमकहराम है। ठाकुर ने यहां की मुसलमान प्रजा के लिए ईदगाह बनवाई, और यह बीरसिंह शुरू से ईदगाह के खिलाफ था। भला बताइए, ईद की नमाज पढने हमें पांच कोस दूर जाना पड़ता था, सुलेमपुर बाजार।

पंचम : ठाकुर मन्दिर की आरती मे कितनी शांति मिलती है ! मेरा बड़ा लड़का बीमार पड़ा। ठाकुर जी के प्रसाद से अच्छा हो गया।

बाकुल : अरे भाई पंचम। तुम्हारी औरत गंगाजली को रामलीला में राम ने चरण स्पर्श करके अहिल्या उद्धार किया, पर इसे तुम नहीं मानते, क्या यह सच है ?

पंचम : अरे मैं उत्तमा को राम मानूंगा ?

बाकुल : अगर किसी दिन गंगाजली ठाकुर के दरबार में तुम्हारी शिकायत करने चली गई तो बुरा होगा पंचम।

पंचम : ऊ ससुरी की इतनी हिम्मत ? डंडा मारकर सिर न फोड़ दूं।

बीपत : तो रमायन मा अहिल्या उद्धार नहीं हुआ ?

पंचम : अरे कहां की बात। किसी के चरण छुआने से उद्धार होने लगे तो उत्तमा ने खुद अपना उद्धार क्यों नहीं किया ?

शेख मौला : भई सुना है ठाकुर नाराज हैं, उत्तमा से, गजाधर पंडत से।

बाकुल : ठाकुर के खिलाफ बात करना अंगरेज हुकूमत के खिलाफ है।

पंचम : अरे जो बात अपनी समझ में न आवे, ऊ बात जाके ठाकुर के दरबार में समझ आवो। पर कौन समझावै ?

कन्हाई : रामबोला चौधरी ने कहा—महात्मा गांधी की जै। उत्तमा की हिम्मत देखो—बोलता है इन्कलाब जिन्दाबाद।

बीपत : इसके माने का भाय बाबू ?

पंचम : ठाकुर से पूछो जाकर।

[सब लोग धीरे-धीरे बातें करने लग जाते हैं। मंदिर की आरती का संगीत सुनाई देता है। सारे लोग हाथ जोड़ कर खड़े हो जाते हैं।]

बाकुल : आज मन्दिर मे बाहुर कगास भोजन है।

पंचम मन्दिर मे काले पत्थर की जो गोपाल जी की मूर्ति है, ठकुरानी उन्हीं गोपाल जी की पूजा करती है। पुजारी बताते हैं—गोपाल जी जीवन के देवता हैं हाथ मे वंशी धारण किए हुए।

बाकुल : नहीं, नहीं। वह प्रेम के देवता हैं। मेरी पत्नी मैना उन्हीं का चरणामृत लेने जाती है।

पंचम . भागो बाकुल सिंह, मैना भाभी आ रही है।

[मैना आती है।]

मैना झूठा कही का! अपने बाबू का ऐसन मरद है? तेरी जीभ मे आग लागै।

बाकुल अरे बात का है?

मैना चलो घर तब बताऊं। हाट मा भीखा साहू की दुकान पर लोग बतकही करत रहे कि मेरा मरद सूर्पणखा के पीछे पागल है।

बाकुल . सब झगड़ा लगाते हैं। ठाकुर से उजुरदारी करूंगा, मुझे रामलीला मे क्या इसलिए लक्ष्मण बनाया गया?

मैना : कन्हइया के मुह मा कीड़ा पड़ें। हमार मरद ऐसन नाहीं ना। मुला तू यहा बैठा का करत हो? खेतीबारी काम कौन देखे? बैल-गोरू का सानी-पानी कौन करे?

बाकुल अच्छा चल, आता हू।

पंचम मैना भौजी, आप भी झूठ के पीछे डंडा लेकर पड़ जाती हैं।

मैना . मेरे मरद को तू पंचे का जानो। आखिर हाट मा ई बात फैली कैसे? ई बात का भेद तो ढूढना ही होगा। नाही तो एक हाथ की लौकी, नौ हाथ बीया!

ढोल मोला . हरगिज नहीं। आपके मरद ऐसे नहीं हैं।

मैना : मुला होत मे कहू देरी लागत है। (सब हस पड़ते हैं।) है!

तू पचे बहुत खीसे मत निपोरो, हां कहि देइत है। (बाकुल का हाथ पकड कर) चलो घर। चलबो कि नाही ?

बाकुल देख, मेरी बेइज्जती मत कर। मैं इस तरह घर नही जाऊगा, हा।

मैना लाव तो लाठी (शेख मौला के हाथ का डडा लेकर) अब चलबो कि नाही ?

बाकुल नाही। मैं क्षत्री हू। तू मेरी औरत है।

मैना तू पचे यहा से हटि जाव। कहि देइत है, बस चुप्पेचाप यहा से चला जाव (सब चले जाते हैं।) अब बोलो।

बाकुल अरे मेरे प्यारी मैना ? क्यो करती है इतना गुस्सा ? बोल, तुझे क्या चाहिए ?

मैना सुनो ! जैसी साडी ठकुरानी पहिनत हैं न, वैसी एक साडी ला दो।

बाकुल बाप रे बाप ! एक बीघा खेत बेचना होगा।

मैना बेच दो। हम तो पहिरब बादररेखवा, चाहे रुपया गज बिकाय। (दोनो जाते हैं।)

दूसरा दृश्य

[ठाकुर का दरवाजा। पचम, कन्हाई के दोनो हाथ पीठ पर बधे हैं। वे धूप म झुके हैं। पीठ पर पत्थर रखे हैं। बीपत जूते पर पालिश कर रहा है। माटी कुए से घडे म पानी भर भर कर ले आ रही है। ठाकुर सिघुसिह का प्रवेश। पीछे पीछे वीरसिह—एक हाथ म पनडब्बा। दूसरे हाथ मे गुलाब-जल भरी सोने की झझरी। वीरसिह ठाकुर पर गुलाब जल छिडकता हुआ आया है।]

ठाकुर तो ये हैं नमकहराम ! और बाकी लोग कहा हैं ?

वीरसिह सिपाही गए हैं पकडने सरकार।

ठाकुर क्यो व सूअर के बच्चे। तुम लोगों की यह हिम्मत। माल-

गुजारी मत दो। हरजाना ना भरो। बेगार करने मे हीला-हवाली करो। पाच नम्बर शुभ है। सबको पाच-पाच हंटर लगाओ।

वीरसिंह : दस-दस हंटर लग चुके हैं।

[माटी घड़ा भरे आती है।]

ठाकुर : यह औरत क्या कर रही है ?

वीरसिंह : कुएं से पानी भर-भर कर हाथी खाने मे छिड़काव कर रही है। सारे शूद्र हाथीखाने की धुलाई मे लगा दिए गए है।

ठाकुर : ठाकुर जी के मन्दिर के बाद गाव मे पोखर खोदा गया। कुए बने। पाठशाला चली। खैराती दवाखाना खुला। पक्की सड़कें बनीं। क्या सब मुफ्त मे हुआ ? हरजाना, नजराना, दूध, दही, घी, मछली, गोश्त, अंडा का शुकराना कैसे कम हुआ ? एक-एक की खाल खिचवाकर भूस भरा दूगा !

लोग : दुहाई सरकार की, छिमा करो।

[बाहर से भोला मौला, बाकुल और गाव के अन्य स्त्री-पुरुष सिर पर अपने-अपने घरो से दूध, दही, घी, मछली, मास, सब्जी की सौगात लिए आते हैं।]

ठाकुर : खबरदार, पहले की ही तरह रोज आएगे ये सौगात। ये चीजें तुम्हारे खाने के लिए नहीं बनी हैं। समझे !

[सौगात लिए लोग अन्दर चले जाते हैं।]

ठाकुर : पचानन किधर है ? वह उत्तमा क्यो नही हाजिर किया गया अब तक ?

[एक सिपाही पंचानन को पकड़े ले आता है।]

ठाकुर : इसने भी अब तक मालगुजारी नही दी ?

वीरसिंह : इसकी कोई खेतीबारी नही है, सरकार।

ठाकुर : तो क्या हुआ ? यह इस गाव का अन्न-पानी तो खाता-पीता है।

बाबा : ठाकुर ! ईश्वर तुझे सद्बुद्धि दे।

ठाकुर : झुका दो इसे धूप में। इसकी पीठ पर तीन मन का पत्थर

रखो। चलो, देखते क्या हो।

वीरसिंह : यह सन्यासी है धर्मावतार। यह नदी का पानी पीता है। खेतो मे गिरे अन्न बटोरकर उसी से पेट पालता है।

ठाकुर : सारे खेत हमारे हैं। नदी का जल मेरा है। यह मेरे राज्य की हवा म जीता है। राजकर इसे भी देना होगा।

बाबा : सावधान ठाकुर ! अपना सामजस्य मत तोडो।

ठाकुर उपदेश नही मालगुजारी चाहिए।

बाबा याद रखो, प्रवृत्ति के प्रबल हो जाने से ही त्याग और भोग का सामजस्य टूट जाता है।

ठाकुर . बन्द करो बकवास।

बाबा किसी एक स्थान पर जब हम अपने अहकार और वासना को केन्द्रित करते हैं तब हम समग्र को क्षति पहुचाते हैं।

[भीतर से लोग सौगात देकर वापस लौटते हैं और खडे रह जाते हैं।]

ठाकुर इन लोगो ने कर दिया ?

वीरसिंह . इन सबों न दुगुनी मालगुजारी दे दी है सरकार !

ठाकुर . (उत्तेजित) मैं राजकर की बात पूछ रहा हू। अगरेज बहादुर अपन देश म जर्मनी से लडाई लड रहा है। हमे उसकी मदद करनी है। अगरेज बहादुर की लडाई हमारी लडाई है।

वीरसिंह चलो, सब धूप म झुककर खडे हो जाओ।

[सब झुक जाते है।]

ठाकुर : क्षत्री और मुसलमान को मै छूट देता हू।

शेख मौला हम पर ऐसी खास मेहरबानी क्यो ?

ठाकुर जबान मत चलाओ।

बाकुल . राजा ठाकुर की जै हो।

[गगाजली सिर पर कोई सौगात लिए आती है।]

ठाकुर यह औरत कौन है ?

वीरसिंह वही गगाजली, जिसका यह शोहर पचम इसे पतिता, कलकिनी मानकर इसके हाथ का छुआ पानी तक नहीं पीता।

ठाकुर खबरदार हवेली में मत ले जाना अपनी यह सौगात। जा पीलवान को दे आ।

गंगाजली हाय ! मेरे पति की यह दुर्दशा !

वीरसिंह जा यहां से।

[वह जाती है।]

ठाकुर प्रजा के विश्वास के ही साथ हमें चलना है।

बाबा ऐसा अधविश्वास इस गांव में कभी नहीं था। हम गरीब थे, पर दरिद्र नहीं। इनके धर्मविश्वास इतने पंगु नहीं थे।

[सिपाही के साथ गोपी और जगमग आते हैं।]

ठाकुर हूंम ! मुंह पर से घूंघट हटा। सुनती है या नहीं ?

माटी दुहाई सरकार की। यह मेरी बहू है। मेरे बीपत की दुलहिन।

ठाकुर खींच दो इसका घूंघट।

[सिपाही घूंघट खींच देता है। गंगाजली लौटती है।]

ठाकुर ओह इतनी खूबसूरत ! जब तक तू पूरी मालगुजारी अदा नहीं करेगी यह हवेली में रहेगी।

गंगाजली सरकार, इसकी कितनी मालगुजारी बाकी है ?

[वीरसिंह ठाकुर को पान देता है। इत्र गुलाब छिड़कता है। कान में कुछ कहता है।]

ठाकुर कितने साल से इसकी मालगुजारी बाकी है ?

वीरसिंह पिछले पांच साल से।

माटी हाय दइया ! हर साल तो हम मालगुजारी भरते रहे हैं।

ठाकुर रसीद दिखाओ।

बीपत मालगुजारी की रसीद कहां मिलती है सरकार।

वीरसिंह चुप रह। जो देता है उसे मिलती है।

जगमग आज तक किसी को नहीं मिली है।

ठाकुर ले जाओ इसे हवेली में।

[दोनों सिपाही गोपी की तरफ बढ़ते हैं। बाबा उन्हें रोक लेता है।]

बाबा : आपको हम धर्मावतार कहते हैं।

ठाकुर : वह मैं हू, तभी तुम्हें कहना पड़ता है।

बाबा : नही, अब लगता है, वह हमारे ऊपर आपका डाला हुआ एक झूठा सस्कार है।

ठाकुर : इस औरत को ले जाओ हवेली में।

बाबा : सावधान ! हवेली खडहर हो जाएगी !

[ठकुरानी का तेजी से प्रवेश।]

ठकुरानी : नही, नही। हाथ जोडती हू, अपने शब्द वापस लो। हमें क्षमा करो। ठाकुर महाराज का चित्त शात नही है। नए अगरेज कलक्टर से मिलकर आए हैं जब से…।

बाबा : मेरे क्षमा करने से कुछ नही होगा। मेरे शब्द वापस लेने से क्या होगा ? यह देखो अपनी प्रजा की दशा। कही कोई हमारा भी अधिकार है, यह बात ये पूरी तरह नही समझते। न जाने कब इनके जीवन मे एक घटना घटी थी—उस मछली जैसी घटना, जो एक शीशे के टब मे कैद कर दी गई थी। कई बार सिर पटकने के बाद उसकी समझ मे आया कि शीशा पानी नहीं है। बाद मे उसे एक तालाब मे डाल दिया गया—लेकिन उसे यह सोचने की हिम्मत नही हुई कि यह शीशा नही, पानी है। और वह एक छोटे से दायरे मे ही चक्कर लगाने लगी। सिर टकराने का भय गहरे सस्कार की तरह हमारे रक्त मे छा गया है।

ठकुरानी . यह अन्याय है, उठो। अपने घर जाओ।

[लोग उठ खडे होते हैं।]

ठाकुर : यह क्या किया ?

[सारे लोग जाते हैं। पृष्ठभूमि से 'भारतमाता की जै, भारतमाता की जै' के स्वर उठते है।]

ठाकुर : (सहसा) कौन है ? कौन है वहा ? इधर चलो, वरना गोली मार दी जाएगी।

[उत्तमा आता है।]

ठाकुर ओह ! तो तू था वहा। यह जै जैकार कहा से आई ?

उत्तमा हम से।

ठाकुर सबसे पहले भारतमाता का नाम किसने लिया ?

उत्तमा मैंने।

ठाकुर इसके मतलब जानते हो ?

उत्तमा राम बनकर राम का अथ नही जाना। पर रहस्य का पता चल गया—किसी और क बनाने से कोई कुछ नही होता।

ठाकुर मेरी ताकत का पता है ?

उत्तमा हमारे बापदादो म जमाने से जो हिन्दू मुसलमान भाई के भाई की तरह यहा रहते आये है उसम तुम्हारी ताकत जहर फैला रही है। गाव म एक परिवार की तरह सारी जातिया रहती आयी हैं। तुम्हारी ताकत हम सवण और शूद्रो म बाटने की कोशिश कर रही है। धम के नाम पर अ धविश्वास और छूआछूत की नफरत फैला कर हमे लडाना चाहते हो।

ठाकुर झूठा मक्कार ! गाव म मदिर बनाकर हमने यहा सोय हुए लोगो को जगाया। पोखर, बाग और पाठशाला बनाकर हमने मरे हुए लोगो को जीवन दिया।

उत्तमा केवल अपनी स्वाथ सिद्धि के लिए। गाव हमारी ज मभूमि है, पर सम्पूण भारत मातृभूमि है, तुम्हे इसका विरोध क्या है ?

ठाकुर बीरसिंह।

बीरसिंह जी सरकार !

ठाकुर इसके घर को यहा से उजाड दो अभी, इसी वक्त ! नीव से खुदवा कर फेंक दो। जिस किसी के मुह से भारतमाता की आवाज निकले उसे पकड कर मेरे पास ले आओ।

बीरसिंह ऐसा ही होगा।

उत्तमा सुनो भारतमाता की आवाज—कुल स ग्राम से सारी पृथ्वी से भी भारत देश महान है।

ठाकुर भारतमाता का नाम मैं और सुनना नही चाहता।

ठकुरानी उस नाम म ऐसा क्या है यही तो मैं जानना चाहती हू।

ठाकुर : चलो, मैं बताता हूं।

[ठकुरानी का हाथ पकड़ कर ठाकुर भीतर ले जाता है।]

उत्तमा : सुनो। सुनो ठकुरानी! चाहे जान चली जाए, हम आघात नहीं करेंगे और इसी तरह विजयी होंगे—यही है मां की वाणी जिसे सुना है मैंने। धर्मयुद्ध बाहर से जीतने में नहीं होता, हार कर भी विजय प्राप्त करने के लिए होता है। अधर्मयुद्ध में जो मरता है, उसका अन्त हो जाता है, लेकिन सत्य अहिंसा के युद्ध में मरने के बाद भी बहुत कुछ शेष रह जाता है। सुनो…

[उत्तमा के मुंह को वीरसिंह भींच लेता है। ठकुरानी दौड़ कर आती है।]

ठकुरानी : क्या करते हो? इस जलती हुई आग में दमन का ईंधन डाल कर हवेली का सत्यानाश करना चाहते हो? सुन लो। कहीं किसी का घरबार नहीं उजाड़ा जाएगा। उत्तमा ने ऐसा कोई अपराध नहीं किया।

[उत्तमा चला जाता है। उत्तेजित ठाकुर का प्रवेश।]

ठाकुर : राजकाज में ठकुरानी का यह हस्तक्षेप मुझे बिलकुल नापसंद है। तुम जानती नहीं, यहां किस भयानक चीज की शुरुआत हो चुकी है। अंगरेज कलक्टर ने मेरे पास खबर भेजी है। स्वतंत्रता सेनानियों का प्रभाव मेरे इलाके में बढ़ रहा है। उत्तर से भागे हुए आजाद दस्ते के लोग रूप बदल कर इधर आए हैं। तुम्हें पता नहीं, जिस दिन अंगरेज यहां से गए, यहां हमारा अस्तित्व नहीं होगा।

ठकुरानी : जो ईश्वर की इच्छा होगी, वही होगा।

ठाकुर : भाग्य और भगवान पर अंधविश्वास गांव वालों के लिए हैं, यह छूत की बीमारी तुम्हें कहां से लगी?

ठकुरानी : क्या आपको नहीं लगी? ठाकुर जी के मंदिर पर पहरा लगा दिया। गांवों को सवर्ण और शूद्रों में बांट कर आखिर हमने

किस की रक्षा की ? देवता पर भी कृपण की तरह अपना अधिकार जमा लिया । अपने भोग-विलास के नशे में दान और पुण्य बंद कर दिया। मनुष्य के प्रति स्नेह और श्रद्धा की साम्प्रदायिकता की आग में जला डालने के उपाय रचे। पुण्य का भंडार हमारे लिए विषय का भंडार नहीं हो गया…?

ठाकुर मुझे अनुभव नहीं, ये मनुष्य नहीं, प्रजा हैं। प्रजा माने भेड़, इन्हें सिर्फ एक हांकने वाला चाहिए। इससे अधिक इन्हें कुछ नहीं चाहिए। कुछ भी नहीं। समझने की कोशिश करो, भेड़ बने रहने में ही इनका कल्याण है और इन्हें हांकते रहने में है हमारी विजय।

ठकुरानी : क्षमा हो, आपकी वाणी में वही अंगरेज बोल रहा है, जो पूरे भारत को हांकने वाले की नजर से देखता है।

ठाकुर : चुप रहो ठकुरानी।

ठकुरानी एक दिन जिस भारत ने मनुष्य के प्रति श्रद्धा द्वारा समस्त पृथ्वी में अपना मनुष्यत्व उज्जवल किया था, आज वही इतनी लम्बी गुलामी में मनुष्य के प्रति अश्रद्धा दिखाकर स्वयं अश्रद्धा का भागी हो रहा है।

ठाकुर : तुम्हारी ये बेसिर-पैर की बातें कोई और सुनेगा तो क्या फल होगा, पता है ?

[ठकुरानी शून्य में देखती रह जाती है।]

तीसरा दृश्य

[रात का समय। पंचानन बाबा के घर के सामने लोग इकट्ठे हैं। ढोल, मंजीरा, करताल और हड़ताल के संगीत की तैयारी है। शेख मौला आते हैं।]

शेख मौला मैं सोचूं, इस साल होली सूखी ही रह जाएगी।

बाबा : आओ भाई शेख मौला, तुम्हारे बिना फगुआ हो ही कैसे

'सकता था।

शेख मौला चइत्तर चौधरी का ला रहा था, मगर वह बोले, मगल के दिन घर से बाहर नहीं निकलता। मैंने कहा—चौधरी दिन नहीं रात है। वह बोले आज दिशाशूल है।

कन्हाई हां, उनके घर से जगमग का घर उत्तर दिशा म पड़ता है—मगल बुध उत्तर दिसकालू, घर से निकले काटे भालू।

पचम अरे उस दिन पुजारी ने बताया कि आज प्रदोष है, राहू की महादशा है, सो सारा दिन मैं बिना अन्न-पानी के रह गया।

[उत्तमा आता है।]

उत्तमा भारतमाता की जै।

[सब जय-जयकार करते हैं।]

एक आदमी भइया हो। ई महात्मा गाधी कहा के राजा हैं?

बाबा ई देखो तसवीर।

[बाबा गाधी का चित्र दिखाता है।]

दूसरा आदमी राज तो ठाकुर का है।

बौपत नाही राज अगरेज का है।

कन्हाई ई समझो कि महात्मा गाधी भगवान के अवतार हैं। धरती पर पाप बढ़िगै रहा। हाथ म सुदर्शन चक्र की तरह चरखा। हाथ मे बासुरी की जगह लकोटी।

बाबा अब दुख नही होगा। झूठ नही रहेगा। पाप नही ठहरेगा। देश का उद्धार होगा। अब किसी बात का डर नही।

उत्तमा अगरेज राज खतम होगा। ठाकुर की ठकुराई जाएगी।

पहला आदमी हे भइया। बिना अगरेज के ई मुलुक का राज कइसे चलेगा?

उत्तमा देखना। भारत आजाद होगा, जब स्वराज आएगा।

पचम ई सुराज क्या है?

कन्हाई सच भइया, अगरेज चले जइहै? लाल पगडी औ लाल आखें नाही रहेगी?

बौपत धनि-धनि भाग, कलियुग बीतेगा।

[सगीत बजने लगता है। लोग' फाग गायन शुरू करते हैं।]

सखी आजु अजुध्या रची होरी
केकरे हाथ मृदग भल
सोहे केकरे हाथ मजीरा भलो।
राम के हाथे मृदग भल सोहे,
लछिमन हाथ मजीरा भलो।
केकरे हाथ कनक पिचकारी
केकरे झोली अबीरा भरी।
राम के हाथे कनक पिचकारी
लछिमन झोला अबीरा भरी।
किनके भीजै पाग दुपट्टा
किनके चोली चीरा सखी।
राम के भीजै पाग दुपट्टा
सीता के चोली चीरा सखी।
सखी आज अजुध्या रची होरी।

दीपत : पचो, एक उलारा होइ जाए।

सब : चितवै चारो ओर, ताकै चारो ओर, जेकर छोटा बला-मुआ···

[गान समाप्त होते ही बाबा खड़े होकर]

बाबा : बोलो भाइयो। भारत माता की जै। महात्मा गाधी की जै।

[सब एक साथ जय-जयकार करते हैं।]

बाबा : भाई रे, आज दिन आया है। गीत गाते-गाते इस गाव के हिन्दू और सुलेमपुर के मुसलमान एक साथ गले मिले। जात-कुजात ब्राह्मण ठाकुर, शूद्र सबने एक साथ महोत्सव मनाया। घर घर मे गाधी का चरखा चल पड़ा। बूढी मा, दादियों ने बहू-बेटियो को सूत कातना सिखाया। और बातें बतायी कि कैसे पुराने जमाने मे वे सूत काता करती थी।

उत्तमा : स्वराज चदा के लिए मुष्टिभिक्षा के लिए घर-घर में मटका रखा

गया। गाव म एकता बढी। नशा पानी छोडने की बात गाव-गाव में समझाइ जान लगी।

वीपत (खड़ा होकर) पुराना समय बीत गया। अधियारी रात गई। गाधी का सतजुग आया। अब हम कोऊ डर नाही।

[एक स्वर मे जय जयकार— भारतमाता की जै।" तभी बाहर से ठाकुर क साथ बीरसिह दो सिपाही और बाकुल सिह लोगो पर हिसक आक्रमण करते है। भगदड मचती है।]

उत्तमा भाइयो! हिंसा का जवाब अहिंसा से देंगे!

बाबा हम पर जैसा आक्रमण हो हमारे हाथ नही उठेंगे। भारत माता की जै!

उत्तमा हिंसा का जवाब अहिंसा से। अगरेजो भारत छोडो! जमीदारी का नाश हो! हम आजादी ले के रहेंगे! स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

[सघर्षरत मच खाली हो जाता है। लोग पृष्ठभूमि म चले जाते हैं। भारत माता की जय जयकार क साथ चीख पुकार मारपीट की आवाज उभरती है। धीरे-धीरे सब शात हो जाता है। अकले बाबा आता है।]

बाबा विश्वास और अधविश्वास भी फल गया देखते ही देखते। पुलिस की लाठिया पडी। धरपकड मची। घर लूट गए। गाव के गाव के फूक दिए गए। राजा ठाकुर के साथ अगरेज कलक्टर और पुलिस कप्तान के दौरे होने लग पूरे इलाके म। जो खद्दर पहने देखा जाता उसे गिरफ्तार कर लिया जाता। जो गाधी टोपी पहने मिलता, उसे मारकर बेहोश कर दिया जाता। सुलेमपुर के मुसलमानो को अवधपुर के हिन्दुओं के खिलाफ भडकाया गया। तालपुर म भभुआडीह के बीच कितन साम्प्रदायिक दगे कराये गये। चुनाव क बहाने, अल्प-सख्यकों के नाम पर अगरेजो ने मुसलमानो को अलग

पाकिस्तान बनाने को उकसाया। हरिजनो को हिन्दुओं से काटने के जाल फैलाए गए। अवधपुर के लोगो के जीवन का केन्द्र वही ठाकुर का मदिर था। और अब उस मदिर पर भी राजा ठाकुर ने पहरा बैठा दिया। जो स्वराज की लड़ाई के साथ थे, वे मदिर मे नही घुस सकते थे। शूद्रों के लिए मदिर प्रवेश अपराध था। पर पूरे गाव के लिए वह मदिर ही जैसे जीवन केन्द्र था। मदिर के बाहर ही वे अपने राम को पुकारते। कृष्ण की टेर लगाते।

[गाव के स्त्री-पुरुष मदिर के बाहर बैठ कर गा रहे हैं।]

हरि दरसन को तरसति अखिया।
झाकति झखति झरोखा बैठी
कर मीडति ज्यौ मखिया।
हरि दरसन को तरसति अखिया।
बिछुरी बदन सुधा निधि रस तैं
लगति नही पल अखिया
हरि दरसन को तरसति अखिया।
तरसत अखिया बिपति भरी रतिया
हरि दरसन को तरसति अखिया।
जैसे पछिन कै कटि जाय पखिया।

[बाबा और उतमा आते हैं। सगीत थम जाता है।]

कन्हाई : धन्य हो भगवान का। जेल से छूट कर आ गए।

गगाजली. महावीर जी को परसाद माना था।

माटी : काली थान पर देवी कीर्तन कराऊँगी।

पचम : अपनी गगाजली काशी विश्वनाथ के दर्शन से पवित्र हो गई। हम काशी धाम गए थे।

बाबा : छोडो भाई, पिछली बातें भुला दो। आजादी की लड़ाई बहुत दूर तक चली गई है। अब अगरेज यहा से जाने को हैं।

उतमा : गाधी ने कहा है—मदिर मे सब का प्रवेश हो। कोई छूत-

अछूत नहीं। बिना संघर्ष किए कोई अधिकार नहीं मिलता।

पंचम भगवान के दरवाजे पर भी संघर्ष। हाय! भगवान क्या सोचेंगे?

उत्तमा संघर्ष और सत्याग्रह। भारत माता की जै।

बाबा भगवान ने खुद कितने संघर्ष किए हैं। राम जीवनभर राक्षसों से लड़े। कृष्ण भगवान जन्म से अन्त तक लड़ते ही रहे। गीता में अर्जुन को लड़ने के लिए तैयार किया। उठो।

[लोग जय-जयकार करते हुए मंदिर के द्वार की ओर बढ़ते हैं। दो सिपाही पुजारी और वीरसिंह उन्हें रोकते हैं।]

वीरसिंह खबरदार, जिसने पैर आगे बढ़ाए।

पुजारी शूद्रों को मंदिर में घुसा कर भगवान को अपवित्र करना चाहते हो?

बाबा यह मंदिर जिस पृथ्वी पर है उसी पर सब खड़े हैं।

पुजारी फिर मंदिर के भीतर जाने की जरूरत?

उत्तमा यह मंदिर हमारे खून-पसीने से बना है। सबने मिलकर इसे बनाया है।

पंचम यह देवभूमि पूरे गांव की है।

बोपत सबकी है।

गंगाजली भगवान सब के हैं।

वीरसिंह पर यहां भगवान को लाया कौन? उनकी प्रतिष्ठा किसने की?

[ठाकुर का बंदूक लिए प्रवेश]

बाबा किसने की?

ठाकुर मैंने।

उत्तमा तुम्हारी यहां प्रतिष्ठा किसने की?

ठाकुर खुद मैंने।

उत्तमा नहीं। हम ने।

ठाकुर इन मूर्खों और बेवकूफों ने, जिन्हें तब उठने-बैठने का शऊर

नहीं था नग, भूखे, बेघर, आलसी, कमजोर, मरे पड़े थे। आज मेरे खिलाफ य नमकहराम सिर उठा रहे हैं। जिसने जीवन दिया उसी क खिलाफ खड़े होने का हौसला करत हैं?

उत्तमा सच है—धर्म क नाम पर तुमन जगाया, पर हमारी कमाई लूटने के लिए। जीवन दिया, पर खुद उस पर राज करन के लिए। अपने मोग के अलावा यहा और कोई नहीं था तुम्हारे सामने। केवल तुम्हारा अहकार था।

ठाकुर मैंने धर्म का जीवन शुरु किया।

बाबा धर्म अहकार नही है। धर्म, दर्शन और अध्यात्म भी नही है। धर्म, केवल जीवन है। उस जीवन का तुम्ह कोई पता नही। क्योकि तुम अपने पर नही, दूसरो पर राज्य करना चाहते हो। दूसरा की कमाई पर विलासी बनते हो। तू अंगरेज-गुलाम *अपने आप को राजा ठाकुर समझता है।*

ठाकुर आगे और जबान चलाई तो…।

उत्तमा . हमी ने तुम्हे यहा प्रतिष्ठित किया। हमारी गरीबी, निराशा, अधविश्वास, यही वह भूमि थी, जहा आकर तुम अपने राज-महल का स्वप्न देखा।

[ठकुरानी आती है।]

उत्तमा मदिर म हम प्रवेश करेंगे।

बाबा मदिर हमारी धरती पर हमारे हाथो से बना है।

उत्तमा मदिर हमारा है।

बीपत *हम सबका है।*

ठाकुर : एक शर्त पर। फिर कोई नही यहा भारत माता की जय-जय-कार करेगा।

उत्तमा यही जै जैकार करते हुए हम मदिर मे प्रवेश करेंगे।

बाबा : चलो आगे बढो।

ठाकुर (बदूक तानते हुए) देखता हू किसके पैर बढते है आगे।

उत्तमा मैं बढता हू।

[ठकुरानी दौड कर ठाकुर की बदूक के सामने खडी हो जाती है।]

ठाकुर हट जाओ !

ठकुरानी तुम्हारी बदूक से गोली निकले, किसी प्रजा का खून हो, तो वह पहली प्रजा मै हू।

ठाकुर . तुम हद से आगे बढ रही हो।

ठकुरानी सब कुछ आगे बढ रहा है। कही कोई चीज स्थिर नही।

ठाकुर • इन्हे छूट देने का मतलब समझती हो ?

ठकुरानी . केवल इतना समझती हू —आकाश के नीचे जिस पृथ्वी पर चाद और सूरज के प्रकाश मे हम सब समान रूप से खडे है, यह साबित करता है हम सब एक है, समान हैं।

ठाकुर इसका मतलब म शूद्रो को मदिर मे जाने दू और अपने भगवान को अपवित्र होने दू ?

ठकुरानी भगवान ने शूद्रो के घर भोजन किया है।

ठाकुर : वह उनकी कृपा थी। यहा ये जबरदस्ती कर रहे हैं।

बाबा देखो, ईश्वर को तुम अपनी कृपा से जोड रहे हो।

ठाकुर हा, जब तक मे यहा का मालिक हू, बिना मेरी कृपा के यहा कुछ नही हो सकता !

बाबा : हवा नही बह सकती ? चाद-सूरज नही निकल सकते ? धरती घूम नही सकती ?

[सब हसकर उपहास करते हैं।]

वीरसिह खामोश !

बाबा (सहसा) ठाकुर ! यह देखो चीटियो का झुड, जमीन पर। रेंगती हुई असख्य चीटिया। पहचानो। देखो। इसमे कोई इन्द्र है, कोई विक्रमादित्य, कोई चक्रवर्ती, कोई महाराजा, कोई मुगल राजा, कोई हिन्दू सम्राट, कोई भिखारी, कोई मत…।

[ठकुरानी सहित गाव के लोग जमीन पर झुक कर देखने लगते है।]

ठाकुर . जाओ, मदिर म ताले लगा दो।

बाबा जाओ सूर्य को हवेली मे बद कर लो। यह सूय जो सबका है पुरुष परमेश्वर है। आओ, म उसको अपने माथे पर उठाए मदिर मे प्रवेश करने जा रहा हू।

[बाबा के पीछे सब बढते है। सघर्ष होता है। सब पृष्ठभूमि मे चले जाते हैं। भारत माता की जय जयकार के बीच बदूक का फायर होता है। हाथ म बदूक लिये उत्तमा ठाकुर के साथ निकलता है।]

उत्तमा एक गोली बेकार चली गई, इस बदूक मे अभी दूसरी शेष है।

ठाकुर : मेरे पास न बदूको की कमी है न गोलियो की। बस, खबर भेजते ही अगरेज कलक्टर, पुलिस कप्तान की सारी ताकत यहा पहुचेगी और इशारा देत ही यह सारा गाव खाक मे मिला दिया जाएगा।

उत्तमा और तुम खाक नही होगे?

ठाकुर मैं इस मिट्टी का नही।

[रोती हुई ठकुरानी आती है।]

उत्तमा इस माटी का अन्न खाया है। यहा की वायु से जीवन लिया है। राजा हमने बनाया तुम्हे।

ठाकुर मैं खुद बना। अपनी बुद्धि और ताकत से।

ठकुरानी वह बुद्धि और ताकत तुम्हे कहा से मिली?

ठाकुर : मेरे रक्त म थी।

ठकुरानी : वह रक्त क्या था? ठकुरानी मैं हू। जिन हाथो ने बनाया, उन्हें ही तोडकर बने रहने का स्वप्न मिथ्या है। इस हिंसा से जो मरा है, वह हमी हैं। हमसे बाहर कही कुछ नही है। उसी के हम अश हैं।

उत्तमा जिस बदूक को अपनी शक्ति मानते हो, वह हमारा ही दान था। अब वही दान तुम्हें सुख की नींद नही सोने देगा।

ठाकुरानी क्षमा करो, हे यशोदानदन! मुरली मनोहर, हम क्षमा

करो। हे सीतापति राम। हे करुणापति•••।

ठाकुर : ईश्वर की रक्षा करना मेरा धर्म था।

उत्तमा : अब तुम्हारी रक्षा कौन करेगा ?

ठाकुर : मैं सुरक्षित हू अपने बल से।

उत्तमा : वह बल हमी थे।

ठाकुर : मैं इस गाव को समूल नाश करके छोडूगा।

ठकुरानी : रावण का अहकार याद है?

[सन्नाटा]

उत्तमा : लो सम्हालो अपनी बदूक, अपनी इस मातृभूमि का किसी के हाथ नाश नही होने देना चाहता।

चौथा दृश्य

[एक ओर से गोपी और उत्तमा, दूसरी ओर से पुजारी आकर]

पुजारी : सो ऐसा है रे कि प्रारब्ध बडा बली होता है। आज तेरा मुह बडा चिकना लग रहा है।

गोपी : खाय खाय के मोटाय गए है।

पुजारी : ठीक पकडा। निमित्त ऐसा है। शुभस्य शीघ्रम्। गाव-गढी की हालत का पता होगा। आजकल धर्म नही रहा। इधर भारत माता की जय, उधर राजा राजा राजा राम। खीर बनाएगे महात्मा गाधी के नाम का, खार डाल देंगे उसमे न जाने किस काम का। पर मैं क्या किसी से डरता हू। अभी खोदने बैठूं तो सात पुश्त को खोद डालू। मैं क्यो डरू ? मैंने पचानन बाबा से कह दिया ••देखो खबरदार, जबान सम्हाल-कर बात करो। नही तो जीभ गल जाएगी। धर्म नही सहेगा रे यह झूठ।

उत्तमा : कुछ साफ साफ भी तो कहो।

पुजारी : जो भी हो, वे मालिक हैं। किसने नही खाया नमक उनका ?

अरे लोगो ! तुम्हारे दातो म अभी भी लगा होगा उनका दाना ! अरे वशनाश क समय कलमुहा जनमते हैं। हाथी मरे तो भी नौ लाख का। बोल ना, क्या नही होता ? कल के छोकरे, घोल जमाने की बात कहत है। ससुरो का वश डूबेगा, हा।

गोपी तोहार वश फूल, यही ना। तोहूरे पट मा दात है। इधर कलह लगाइ देंगे। उधर चिकोटी काटि लेंगे। माभो कपार मा पित्त बढ गया है।

पुजारी जथा राजा तथा प्रजा। मतलब यह कि पातजल योग के तीसरे अध्याय के अठारवें श्लोक मे कहा गया है कि पूवजन्म का ज्ञान होता है।

उत्तमा बैठिए। मैं यह समझना चाहता हू।

पुजारी राज दरबार मे आओ। सत्सग करो। एक से एक विद्वान, योगी पडित आते है राजा ठाकुर के पास।

उत्तमा पर इस श्रेष्ठ दशन का असर क्यो नही होता ? एक सिर्फ धम के नाम पर होंठ हिलाता है दूसरा धम को पाठ मानकर मन बहलाता है।

पुजारी अब मुझे विलम्ब हो रहा है। ठाकुर जी की सध्या आरती का समय हो गया है। आओ ना, सारा नैराश्य दूर हो जाएगा— मदिर मे श्रीमदभागवत की कथा बैठी हुई है।

उत्तमा आपने अभी ज्ञान की बात कहा थी।

पुजारी देखो मैं अपने चित्त की शाति को नष्ट नही करता।

उत्तमा चित्त की शाति ?

पुजारी सब का सार तत्त्व यही, राजा नही, तो प्रजा नही। (जाते हुए) शुभस्य शीघ्रम। शुभस्य शीघ्रम। नमो नारायण !

[चला जाता है। उत्तमा शून्य मे देखता रह जाता है]

उत्तमा जो है उसे किसने बनाया है ?

गोपी भगवान ने।

उत्तमा भगवान को किसने बनाया ?

गोपी भगवान ने।

उत्तमा मतलब खुद कोई अपने को बना सकता है। यही बात ~ ।

गोपी हे राम, मैंने यह थोड़े ही कहा। भगवान बना सकता है। आदमी थोड़े हा।

[माटी आती है।]

गोपी हे रे तू इहा का कर रही है?

माटी हे भइया सिपाही अपने पीछे लगे है। (गोपी से) हे रे तू हवेली म जाती काहे नाही। बता, अपने मरद को बचाएगी या अपने को? आग बुझाएगी या लगाएगी?

गोपी लड़ूगी, जान दे दूगी।

उत्तमा : गोपी!

माटी ठाकुर चाहेंगे तो दीपत को पुलिस छोड देगी।

उत्तमा ठाकुर कैसे चाहेगे?

माटी उपाय है। समझदारी से बिगड़ा काम बनता है।

गोपी बड़ी आई है बनान।

माटी मेरी बात मानेगी या नहीं? बोल!

गोपी • नहीं।

माटी का?

गोपी नहो नहो नहो।

[माटी उस पकड़ना चाहती है। वह भाग कर निकल जाती है।]

माटी राजा ठाकुर का परताप मामूली नाही। कप्तान की मेम आई थी हवेली म। सुना है तीन खून माफ हो गया है ठाकुर का। भइया हो मेरी मानो, गाव छोडकर कही दूर मुलुक म जाए छिपो। अपनी जिदगानी नही तो कुछ नहीं। (सहसा) हाय दइया, ठकुरानी की पालकी आय रही है।

[भागती है। ठकुरानी आती है।]

उत्तमा ठकुरानी को प्रणाम।

ठकुरानी प्रणाम।

उत्तमा कहा कैसे बैठाऊ ?

ठकुरानी बैठने आई नही। हुठी भवानी के सगरा जाने के बहान कुछ कहन आई हू। हठी भवानी कभी नही गए होगे न ? गधक को गध आती है सगरा से। मदिर न जाने किस जुग का है। मदार चकवड अड्सा के झुरमुटो म ऊची नीची होती हुई जमीन म झाड झखाड क नीचे वह हठी भवानी का मदिर सोया पडा है। उसकी अगनाई म मधुमालती और कनेर के पेड भरे हैं।

उत्तमा क्या कहना चाह रही हैं ?

ठकुरानी क्या ऐसा लगता है मैं कुछ कहना चाह रही हू ? फिर तो चुपचाप यहा से चल देना चाहिए।

उत्तमा क्षमा हो। कहिए।

ठकुरानी पर क्या ?

उत्तमा जो आप बोल रही थी।

[विराम]

ठकुरानी यहा की औरतो ने बताया। मैं गो बार यहा हो आई हू। मदिर की झाडी क किनारे छिछले पानी के कीचड म, सप्तमी के दिन आख मूदकर टटोलने से जो मिले उसे पेट म डाल लो। सतान अवश्य होगी। छोटी मछली घोघा सेवार, घिइउनी, कीचड माटी जो हाथ लग निगल जाव। कितना जी कडा किया निगल नही पाई। जब औरो का देखती हू, जो आया हाथ मे निगलते हुए तब सोचती हू मैं भी वैसी स्त्री क्यो न हुई।

उत्तमा वह अधविश्वास है। जहालत है। आपन कही ऐसा किया तो

ठकुरानी मर जाऊगी। भीतर मरे जहर फैल जाएगा। तो उनके भीतर जहर क्यो नही फैलता ? बिना निगले मेरे भीतर जहर क्यो फैला है ?

[स नाटा छा गया है।]

ठकुरानी हठी भवानी का सगरा, वह टूटा मदिर, वह कीचड बावली, वह भवानी टोटका किसने बनाया ? किसी हठी राजा-रानी ने बनाया होगा। वह सब टूट कर भी अब तक क्यो नही मिटा ? क्योकि वही सत्य है।

उत्तमा वह अधविश्वास है।

ठकुरानी शब्दो के बाण मत चलाओ। आओ चलो मेरे साथ। तुम्हारे केश मे सगरा को झाडी से नाग केसर खोस दू गी तुम्हे कभी, सिरदद नही होगा। सगरा की काई माथे पर चपोड दू गी, डरावने सपने नही आएगे। बकुटेश्वर के टीले पर गिरा हुआ, नीलकठ पख तुम्हारी कमर से लटका दू गी, हाथ पील हो जाएगे (हस पडती है) बोलो, बताओ मुझे। यह पेड अपनी जगह स्थिर आकाश म खडा है। सूर्य की ओर अपलक ताक रहा है, सबको सुगधि और फल दे रहा है—यह पेड का विश्वास है या अधविश्वास ?

उत्तमा पेड केवल वृक्ष है।

ठकुरानी (हस रही है) जिस आकाश मे उडना चाहती हू उसे अधूरा ही जानती हू। वह जानना भी हमेशा सदेह से भरा रहता है।

उत्तमा बचपन म तीन दिन भीख मागता था, तीन दिन पाठशाला पढने जाता, कुछ ही बडा हुआ तो पुरोहिती करने लगा—बारह वर्ष का मैं मत्र पढता हुआ शादी कराता। पूजा, सस्कार, कर्मकाड कराता। एक दिन सोचने लगा—यह जो मैं करा रहा हू वह क्या है ? जो मत्र पढ रहा हू उसका अर्थ क्या है ? जो सस्कार दे रहा हू उसका प्रयोजन क्या है ? (रुककर) जिस धरती पर गिरा हू, उसे जानता हू तभी गिरने की इतनी चोट लगती है।

ठकुरानी अपने शत्रु को जानते हो ? मतलब मेरे पति राजा ठाकुर को ?

उत्तमा जानता हू।

ठकुरानी यही कहने आई हू, नहीं जानते। इन गाव वालो को जानते हो ?

उत्तमा जन्म से इन्ही के साथ रहा हू।

ठकुरानी : अपने समय, अपनी जमीन को जानते हो ? जो इन चीजो को जानता है, इनका 'होता' भी है, वही लडता है, आजादी की लडाई। वही होता है आजाद। (रुककर) केवल तुम्ही से कहने आई हू—यहा कोई आजादी की लडाई नही लड रहा, सब राजा ठाकुर से लड रहे हैं।

उत्तमा • ठकुरानी !

ठकुरानी आजादी आएगी। हम स्वतत्रता मिलेगी प॰ जब तक हम अपनी धरती अपने समय, अपने आप के नही हैं हम आजाद होकर भी गुलाम रहेगे। • आज हठी भवानी वे उस कीचड म जो कुछ भी मिलेगा, मैं निगल लू गी।

[उत्तमा रास्ता रोक लेता है।]

उत्तमा कमल कीचड म फूलता है, पर इसके माने यह नही कि हम कीचड खाए। कीचड है, तभी हम सूय की ओर ताकते हैं जिसके सस्पश से कमल खिलता है।

ठकुरानी यह अनुभव नही, सिर्फ कहने की बात है।

[विराम]

उत्तमा अनुभव क्यो नही होता ?

ठकुरानी प्रेम नही है।

उत्तमा प्रेम क्या ?

ठकुरानी जो है पहले उसी को जीना, बिना किसी शत के।

[जाने लगती है।]

उत्तमा आज मैं आपके सग चलू गा हठी भवानी के सगरा।

ठकुरानी अब मैं हवेली लौट जाऊगी (जाते जाते) सुनो। देखो। वह ठाकुर जी का मदिर देख रहे हो न, उसका वह शिखर क्या कहता है ? देवता के गुलाम बनो ? राजा है तो प्रजा बनो ? नही, सब अपने स्वामी बनें। सब अपने देवता हो। तुम सदा

अपने साथ रहना। मुरली मनोहर का हाथ तुम्हारे माथे पर है। जो कुछ मेरा पुण्य है, तुम्हारा ही है।

[ठकुरानी चली जाती है। उत्तमा देखता रह जाता है।]

पांचवां दृश्य

[संध्या समय। गांव के लोग एक झुंड में चुप, उदास निस्सहाय बैठे हैं। उत्तमा आता है। देखता रह जाता है।]

उत्तमा : हे पंचो। हे भाई हो! कुछ बोलो तो सही। हे, ऐसे क्यों बैठे हो हाथ पै हाथ धरे! बोलो। पंचानन बाबा जेल में उपवास किये हैं हम सब उपवास व्रत रखेंगे।

पंचम : जाकी रही भावना जैसी, हरि मूरत देखी तिन तैसी।

उत्तमा : बोलो भारत माता की जै।

गंगाजली : अजगर करे न चाकरी, पंछी करै न काम, दास मलूका कहि गये सबके दाता राम।

उत्तमा : अपनी आवाज में बोलो। दूसरों की रटी रटाई बातें क्यों बोलते हो?

बाकुल : हे भाई, जेहि विधि राखे राम, तेहि विधि रहिए।

उत्तमा : पुलिस थाने में बीपत की लाश पड़ी है, चलो उसे ले आना है। उठो। बीपत शहीद हुआ है। बोलो बीपत जिन्दाबाद! बोलो—।

जगमग : तुलसी जस भवतव्यता तैसी मिले सहाय, आपु न आवै ताहि पै, ताहि तहां लेइ जाय।

उत्तमा : आह! बस इसी तरह बड़बड़ाते रहोगे। बीपत शहीद हो गया, सुना नहीं?

पंचम : प्रभु मेरे अवगुन चित न धरो।

कन्हाई : अब सुधि लेव मुरारी विपत्ति बड़ भारी।

उत्तमा : ठकुरानी को हवेली में ठाकुर ने कैद कर रखा है। चलो, ठकुरानी के लिए आवाज उठाए।

एक आदमी : रहना नहि देस विराना है। ई ससार कागज की पुडिया, पानी लगे गलि जाना है…।

[उत्तमा लोगो को देखता ही रह जाता है।]

उत्तमा : (मानो चीख पड़ता है) बहुत हो चुका। अब ऐसे नही चलेगा।

पचम . सब ईश्वर की लीला है।

कन्हाई : उसके बिना एक पात नही हिलता।

बाकुल : सब उसी का खेल है।

[लोग सिर झुकाए बैठे हैं। उत्तमा चुप खडा है।]

छठा दृश्य

[एक अधेरी रात। गाव की स्त्रिया उदास बैठी हैं। सबके सामने एक एक चिराग जल रहा है। गोपी निःशब्द रो रही है। औरतें करुण स्वर में गा रही है।]

ओरे लछिमन देवरा, विपत्तिया के नायक
देवरा भइया के लावहु मनाय
नाही तो विष खाबै।
अरेरे भौजी सितल ठकुराइन
देहू ना तिरिया कमनिया मैं भइया खोजे जइहो।

[उत्तमा आकर सिर झुकाए खडा रह जाता है। गोपी हाहाकार कर उत्तमा के पैरों पर गिरती है। उत्तमा उसे उठाता है। सारी स्त्रिया रो रही हैं।]

सातवां दृश्य

[दिन का समय। ठाकुर की हवेली के सामने गांव के कुछ स्त्री-पुरुष]

उत्तमा : भारत माता की…

सब : जै !

[वीरसिंह के साथ हाथ में बंदूक लिये मानो नशे में ठाकुर तेजी से आता है।]

ठाकुर : चले जाओ यहां से। या चुपचाप बैठ जाओ।

वीरसिंह : जबान बन्द !

ठाकुर : आवाज निकली नहीं कि इधर से बंदूक की गोली निकलेगी।

उत्तमा : चलाओ गोली। भारत माता की जै। ठकुरानी को कैद से बाहर निकालो।

गंगाजली : हमें उनके दर्शन कराओ।

ठाकुर : हमारे दर्शन में क्या कोई कमी है ?

[ठाकुर के साथ वीरसिंह हंसता है।]

गोपी : जुल्मी ! हत्यारे !

ठाकुर : अभी कल तक मैं धर्मात्मा था…।

उत्तमा : जवाब दो, हमारी ठकुरानी कहां है ?

ठाकुर : जाओ। हवेली में ढूंढ़ो। ढूंढ़ो जाकर। हम तो खुद अपनी ठकुरानी के दर्शनों के लिए बेताब हैं। लाजवाब हैं। (हंसता है।) बोल ! जेल जाना चाहता है या शहीद होना चाहता है ? दोनों का इंतजाम मेरे पास है। हम खुद अब अंगरेज बहादुर हैं। क्या समझे ? तुझ पर केस चलाकर यह साबित करा दूंगा कि बीपत की हत्या तेरे हाथों हुई है।

गोपी : भगवान तेरे सिर पे वज्र गिरावें। तेरा नाश हो।

शेख मौला : पाप का घड़ा इतना मत भरो ठाकुर कि सब कुछ बह जाए। आखिर जुल्म की भी एक हद होती है।

ठाकुर : ओह शेख मौला, आप भी इन बेवकूफों में शरीक हो गए। तोबा तोबा ! सुनिए, पाकिस्तान बनेगा। आपको इन हिन्दुओं

ने बचा लिया था। आप हमारा साथ दीजिए।

राम भोला आपका मन हम समझ गए। हम वोट कर आजादी की लड़ाई को तोड़ना चाहते हो। इसमें मजदूरों आग भड़का अपना राज कायम रखना चाहते हो। पर अब हरगिज न होगा।

ठाकुर अंगरेज यहां रहेगा। हम यहां रहेंगे।

उत्तमा अंगरेज यहां से जाएगा। फिर राजा जमींदार भागेगा।

ठाकुर : गुलाम करेगा राज?

उत्तमा स्वतन्त्र भारत करेगा।

[ठाकुर ठहाका मारकर हंसता है। अचानक कहीं ठकुरानी के कंठ से वंदेमातरम् का गीत सुनाई पड़ता है। वह चुप हो जाता है।]

उत्तमा ठकुरानी!

ठाकुर मुंह पर पट्टी बांध कर, दोनों हाथ पीठ पीछे कस कर कमरे में डाल दो।

[पुजारी आकर खड़ा रह जाता है।]

ठाकुर जाओ, देखते क्या हो?

पुजारी दुहाई सरकार की। आज इस घड़ी राहु दोष है। चन्द्रा एकादशी के छठे ग्रह पर मंगल का दोष।

ठाकुर चुप रहो। यह कुछ नहीं मानता। यह सब प्रजा के लिए है। राजा विधाता है। वह शास्त्र बनवाता है। ज्योतिष लिखवाता है।

पुजारी मंगलम् भगवान विष्णु।

ठाकुर इस आवाज को बन्द करो, जाओ।

वीरसिंह क्षमा हो मालिक, चित्तौनी के बाबुओं का नमक खाया है। ठकुरानी के अंग पर हाथ नहीं लगा सकता।

ठाकुर नमकहराम!

[बंदूक उठाए क्रोध से एक एक का चेहरा देखता है। ठकुरानी के वंदेमातरम् के स्वर शून्य में कौंध रहे हैं।]

आठवा दृश्य

बाबा • भारत आजाद हुआ । मैं जेल से छूट कर अपने इसी गांव आया । देखा उत्तमा पर बरस, डाके के झूठे इलजाम साबित कर ठाकुर ने उसे कैद दिलवाया । इस गाव के तीन तो सदा के लिए चल गए । एक तो शहीद हुआ वही बीपत । पीठ पर न जाने कितने बेंत पड़े, पर आखिरी सास तक यही कहता रहा—भारत माता की जै । दूसरे गए शेख मौला । सत्याग्रह म जेल गए । जेल से लौटे फिर खादी की गठरी पीठ पर लादी और फिर जेल गए । जब जब गाधी उपवास करते, वह भी करते । तीसरी बार जेल से लौटे तो पता नही क्या रोग लेकर आए कि छाती म दरद रहने लगा । मीठा मीठा बुखार । शेख थे पर रहत थे चमरटोलिया म, झोपडी डाल कर । कहते—जब राष्ट्रपिता बापू हरिजन बस्ती म रहते हैं तो हम क्यो अलग रहे ? झोपडी म रकन की उहटिया करते-करत मर गए । और एक बचा दामोदर सिंह । सबसे बडका किसान घर जल गया । खेनी कुडक हो गई । जिस दिन गाधी की हत्या हुई उसी दिन, सरजी नदी की पार म कूद कर प्राण तज दिया । गाधी विहीन भारत म कैसे रहूगा । (रुककर) पर अवधपुर गाव म असली घन्ना उस दिन घटी जिस दिन जमीदारी खत्म हुई ।

नवा दृश्य

[ठाकुर मदिर के बाहर—ठकुरानी, ठाकुर का पीछा करती आ रही है । रात का समय ।]

ठकुरानी नही नही, ऐसा मत करो ।

ठाकुर . जब मैं नही, तो ठाकुर भगवान भी नहीं।

ठकुरानी : ऐसा मत बोलो।

ठाकुर . इस मदिर के साथ मैं यहा सूरज की तरह उगा था, अब इसे तोड कर मुझे यहां से चले जाना है। शहर मे मेरी कोठी बन रही है, ड्राइगरूम में भगवान की ये मूर्तिया शोभा देंगी।

ठकुरानी . तुम्हारे लिए जो पत्थर की मूर्ति है हम सब के लिए वही साक्षात् भगवान हैं।

ठाकुर . जब तक यहा मेरा राज था, ठाकुर जी यह मेरे लिए ठाकुर थे। औरो के लिए भगवान थे। अब मेरा राज खत्म हुआ, ठाकुर मेरे लिए पत्थर हैं।

ठकुरानी . भगवान सदा तुम्हारे लिए पत्थर थे, तभी तुम्हारा राज खत्म हुआ।

ठाकुर यह मदिर मेरा है। यह भगवान मैंने दिया इन गवाडियो को।

ठकुरानी भगवान के द्वार पर झूठ मत बोलो। तुम जो कुछ हो इसी प्रजा के बनाए हो। जो प्रजा ने चाहा तुम वही हो।

ठाकुर . जो मैंने चाहा, वही हुआ।

ठकुरानी : नही। यह भ्रम है।

ठाकुर • आगे जो मैं चाहूगा, वही होगा।

ठकुरानी प्रजा ने नही चाहा, अगरेज यहा नही रहे। प्रजा ने नही चाहा देखो तुम नही रहे।

ठाकुर अगर मैं नही, तो ये भी नही रहेगे। मैं ठाकुर जी को ले जाऊगा यहा से। यहा जो कुछ बना मेरे कारण। मेरे पुण्य प्रताप से। जब मैं नही, तो यहा कुछ भी नहीं।

ठकुरानी • उस राक्षस की कहानी सुनी थी, जो अपना प्रान सात समुन्दर के बीच, जगल मे एक सुआ के रूप मे सुरक्षित रखे था ?

ठाकुर हट जाओ सामने से !

ठकुरानी ठाकुर !

ठाकुर यहा सब कुछ मेरा था।

ठकुरानी पर अब कुछ नही है। उसी की स्मृति रहने दो।

ठाकुर नहीं।

ठकुरानी मदिर प्रजा के खून पसीने से बना है। पत्थर की मूर्ति मे भगवान की कल्पना इसी प्रजा की है। ईश्वर विश्वास था, तभी यह मदिर बना। तभी तुम यहा के राजा बने। जिस दिन अगरेजो से मिलकर स्वय को भगवान समझने लगे, उसकी नाश लीला शुरू हो गई।

ठाकुर इसी का बदला लू गा। हट जाओ मेरे सामने से!

ठकुरानी कौन हो? कौन हो तुम?

ठाकुर जिसे बनाया है उसे बिगाड कर जाऊगा। इनके विश्वास को ऐसे तोड़ूगा कि उसके अधविश्वास म सदा जलते मरते रहे।

ठकुरानी इस मिट्टी म तुम जैसे न जाने कितने मिट कर धूल बन गए। हठी भवानी का सगरा रगनाथ का डीह झाड झखाड म छिपे असत्य टीले खडहर देवी देवता भूत प्रेत, टोने टोटके जिस सत्य के प्रमाण है तुम नही जानते ठाकुर।

ठाकुर (बढते हुए) यही चाहता हू ये सब इसी सनातन अधकार म डूबे रहें।

[जाता है। सामने पुजारी दिखता है।]

ठकुरानी सनातन अधकार नही सावधान! सनातन वह है जो कभी टूटता नही। कभी खत्म नही होता।

पुजारी हे भगवान आप ठाकुर जी की मूर्ति तोडेंगे?

ठाकुर अपने साथ ले जाऊगा।

पुजारी सत्यानाश होगा।

ठाकुर हट जाओ।

[भीतर जाता है। ठकुरानी दौडती है। तोडने की आवाज होने लगती है।]

पुजारी (चिल्लाता हुआ) दौडो। जागो। गोहार लगाओ, गोहार। ठाकुर मदिर म राक्षस घुसा है। हमारे भगवान को तोडे लिए

जा रहा है। दौड़ो ! जागो ! बचाओ !

[चारों ओर से गाव के स्त्री-पुरुष दौड़ते हैं। मदिर मे जाते है। बिलकुल टूटे हुए लौटते हैं।]

पुजारी : (रो रहा है) हमारे यशोदानदन का पीताम्बर फाड़ डाला। मुरली मनोहर की बासुरी तोड दी। हमारे राधारमन को ···।

पचम : कोई पूर्वजन्म का पाप था।

बाबा : पचो, धीरज बाधो। भगवान सर्वव्यापी हैं। अजर है। अमर हैं।

पुजारी . दशरथनदन का धनुष तोड डाला। जानकीनाथ का मुकुट धूल मे मिला दिया।

बाबा . बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेय···।

पुजारी आगे शून्य है। आगे अधकार है कही कुछ नही है। (विक्षिप्त-सा जाता हुआ) राम बिना सब सूना हो गया। (गाता है) माई रे बिनु राम अब ना अवध मा रहिबे। राम बिना मोरी सूनी अजोध्या लछिमन बिना ठकुराई, सीता बिन मोरी सूनी महलिया, के अब दियना जराई, माई रे !

[रो रहा है।]

पचम हमारे ठाकुर भगवान को कौन ले गया ?

गगाजली वही राजा ठाकुर। सब लुट गया।

[फिर वही दृश्य—काठ के घोडे पर बैठा हुआ ठाकुर राजा आता है। उसके पीछे बदूक लिए सिपाही। गाव के लोग गाते हैं।]

राजा राजा घोडवा कुचौउलैं
छोडवा कुचौइलैं
भागा, भागा यहि गाव से भागा
भागा यहि गाव से भागा।

बाबा राजा के सिर कागा
भगवान को लेकर भागा
राजा के पेट मे पाका,

भगवान पर डाला डाका
भागा देखो भागा भागा
ई गांव है बड़ा अभागा ।

सब राजा राजा घोड़वा कुचौउले
घोड़वा कुचौउले
भागा, भागा यहि गाव से भागा
लूट पाटि कै भागा
भागा यहि गाव से भागा
भगवान को लेकर भागा ।

[दृश्य बदलता है ।]

चौथा अक

[पृष्ठभूमि म वही चुनाव का मगीत फिर उभरता है।]

जगमग — पचायत चुनाव के वोट गिने जा रहे हैं।

कन्हाई — बाकुलसिह और वीरसिंह अगुआई कर रहे हैं।

पचम — वही होंगे सरपच। और पच भी चुने जाएगे उन्ही के लोग।

जगमग — भला जब यहा इतने नीचे इतना जोर जुलुम चलता है तो ऊपर कितना क्या होता होगा !

कन्हाई — बाकुलसिह ने हरिजनो का एक भी वोट नही पडने दिया—हरिजन उनके खिलाफ थे।

जगमग — सुना है, उन सबों की ओर से फर्जी वोट डाल दिए गए।

पचम — हम लोग मिलकर भी इस बेइमानी का विरोध नही कर सके—भला ऐसा क्यो ?

[बाबा आते है।]

बाबा — सारी पचायत बाकुल वीरसिंह और उसके ही लोग जीत रहे हैं। उत्तमा की बात साबित हो गई। जिस व्यवस्था के तहद यह चुनाव है उसकी बुनियाद म वही हिंसा दमन और लूट है जो अगरेज और जमीदार यहा विरासत म दे गए है। उत्तमा सच कहता था, जो अधिकार ऊपर से यहा नीचे आएगा उसे जैसे भी हो ऊपर क ही लोग हथिया लेंगे।

पचम — हम कुछ नही कर सकते ?

बाबा — अरे, उत्तमा आ रहा है !

पंचम — हा, उत्तमा ही है।

जगमग उत्तमा !

[उत्तमा आता है। बाबा के चरण छूता है—दोनो के अक से लगता है।]

बाबा अरे तू कहा था बेटा ? वैसे हम तुमसे माफी के हकदार तो नहीं है पर चलो हमने हम क्षमा कर दिया।

पचम बडे दुर्दिन हैं तुम्हारे इस गाव पर।

जगमग राजा ठाकुर के चले आने के बाद जब तुम जेल से छूटकर आए थे तब तुमने कहा था हम सब एक परिवार की तरह यहां एक साथ बैठकर सर्वसम्मत से पच पुरुष चुन लें। और पचपुरुष परमेश्वर की एक मूरत बनाकर गाव के सूने मदिर म स्थापित कर दें—पर बाबा के अलावा यह बात किसी की समझ मे नही आई।

बाबा देखो उसी का नतीजा यह चुनाव। एक लूट कर चला गया, अपने पीछे लुटेरो की एक जमात पैदा कर गया। (सहसा) अरे, तू चुप क्यो है ? जैसे अब तक गाव के लोग मदिर के उसी ठाकुर भगवान की याद करते हैं, वैसे तू भी उदास है।

उत्तमा मैंने जो देखा उसे बताने आया हू।

[सब पूछने लगते हैं।]

उत्तमा शहर मे ठाकुर सिंघुसिंह की नई कोठी ढूढता रहा—पता लगाया, चक्कर काटता रहा। एक दिन अचानक पा गया उनकी कोठी। ठाकुर मुझे नही पहचान पाए। ठकुरानी नही रही इस दुनिया म। मैं ठाकुर की आलीशान बैठक में गया। वहा देखा—राम और कृष्ण की दोनो मूर्तिया सजावट के सामान के साथ रखी हुई थी।

बाबा ठाकुर जी के दर्शन किए ?

पचम कैसे हैं हमारे गोपाल कृष्ण ?

जगमग मेरे पतित पावन राम कैसे हैं ?

[गाव के लोग दौडे आते हैं।]

कन्हाई कहा हैं मेरे मुरली मनोहर ?

पुजारी : बताओ, हमारे ठाकुर जी को कौन भोग लगाता है ? उनकी आरती पूजा होती है न ! कैसे हैं हमारे प्राणवल्लभ ?

उत्तमा : ठाकुर राजा के लिए भगवान की वे मूर्तियां पत्थर थी—पत्थर की मूरत। ठाकुर की कोठी मे तुम्हारे भगवान खिलौने की तरह रखे हुए हैं।

पुजारी : चुप रहो—भगवान को खिलौना कहने वाले, जीभ कटकर गिर जाएगी, हा।

उत्तमा : यही तो मैं कहने आया हूं—चाहते हो अब कोई दूसरा ठाकुर आकर तुम्हे वही मूरत दे। भयभीत करके राज करे। हमे पशुओ की तरह हाके। और एक दिन हमारी कमर तोड़ने के लिए वही देवमूर्तियां उखाड़ कर लिए चला जाए!

पुजारी : खबरदार, ठाकुर जी के खिलाफ कुछ नही कहना।

उत्तमा : ओह ! यह बात है। आज समझ मे आ गया। जो हमारा शोषक है, प्रताड़क, विनाशक, वही हमे महान, पुण्यात्मा, दयालु लगने लगता है। कोठी, राजमहल, देवालय, सेना-सिपाही, इतनी सारी चमक-दमक, तामझाम से हमारी आखें चौंधिया देता है। धर्मशास्त्र, देवालय, भगवान के पीछे वह धातू अपना असली चेहरा छिपा लेता है।

पंचम : अब हम अच्छाई के लिए किसका मुह देखें ?

जगमग : भगवान थे तो हमे डर था—अब हम किससे डरें ?

बाबा : जवाब दे उत्तमा !

उत्तमा : परतंत्रता के कारखाने मे मशीन की तरह बने हुए हम—एक चालक के हाथ से छुट्टी मिली तो दूसरे चालक के सामने आत्मसमर्पण करना पडेगा।

[विजयी बाकुल और वीरसिंह अपने चुने हुए लोगों के साथ आते हैं, हसते, मोछ पर ताव देते हुए। उत्तमा के साथ गाव के लोग एक तरफ खड़े रह जाते हैं।]

बाकुल : अरे उत्तमा आया है ! आओ भाई, आओ। कहा थे तुम अब-तक ? पता है—ये लोग पच और मैं सरपच चुना गया।

वीरसिंह	ग्राम पंचायत अब अपनी है।
बाबुन	अरे पहले आ जाते तो तुम्हे भी चुनाव मे खडा कर जिता देते।
उत्तमा	मैं अपने पैरो पर अपने पच पुरुषो की धरती पर खडा हू— तुम लोग आसमान मे उड रहे हो, सावधान !
बाकुल	चुप बे, बडा आया !
बाबा	: बडा है—इसे हमने बडा माना।
पचम	· पच पुरुष का चुनाव नहीं होता, वह पाया जाता है।
पुजारी	हमने इसे पाया।
उत्तमा	और हमने अपने आपको पाया !
बाबा	ये हैं हमारे पच पुरुष। पच पुरुष एक साथ बैठकर सोचें —जब शहर से कोई भी यहा आता है—चाहे वह राजा ठाकुर हो चाहे यह चुनाव, हमारे यहा तब इतनी फूट, हिंसा और नफरत क्यो पैदा हो जाती है ? पच पुरुष सोचें !

[परदा]